ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 45 कुल पृष्ठ-16 19 से 25 जुलाई, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 सा.कृ.-07

ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

अनेक सम्भावनाओं को समेटे हुए हजारों आर्यों की उपस्थिति में

सफलता पूर्वक सम्पन्न

विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया महासम्मेलन का उद्घाटन

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी, बिहार के राज्यपाल महामहिम श्री सत्यपाल मलिक जी, केन्द्रीय मंत्री चौ. बीरेन्द्र सिंह जी, श्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल जी, श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी, श्री महावीर अग्रवाल जी तथा आचार्य बालकृष्ण जी ने पधारकर सम्मेलन को प्रदान की गरिमा

विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 6 से 8 जुलाई, 2018 तक गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार उत्तराखण्ड के विशाल प्रांगण में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हजारों आर्य महानुभावों, गुरुकुल के आचार्य, आचार्याओं, गुरुकुल के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणियों, आर्य जगत के प्रतिष्ठित संन्यासियों, वेद ज्ञान से ओत–प्रोत विद्वानों तथा राजनेताओं की उपस्थिति में देश में प्रचलित मैकाले की विषाक्त शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को सारे देश में लागू करने के उद्देश्य से आयोजित हुआ। विदित हो कि अध्यात्मवादी भारतीय जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक उन्नति तथा इह लोक में सुख प्राप्ति नहीं है। बल्कि इस मायामय जगत में रहते हुए सर्वथा निर्लिप्त, निरपेक्ष और निर्लेप भाव से समस्त मानवोचित कर्त्तव्यों का पालन और उत्तरदायित्वों का यथा सम्भव निर्वाह करते हुए अध्यात्म साधन द्वारा भौतिक जगत की सीमा पाकर आध्यात्मिक लोक में विचरण करते हुए मोक्ष की प्राप्ति में है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमारे ऋषियों ने, धर्माचार्यों ने जीवन के प्रथम प्रहर में 25 वर्ष की आयु तक तपोवनों के शान्त, उन्मुक्त, स्निग्ध, उज्ज्वल, पावन, प्राकृतिक छटापूर्ण वातावरण में ब्रह्मवेत्ता गुरुजनों के चरणों में अवस्थित हो तपोत्याग एवं मनोयोग पूर्वक विद्याध्ययन करना प्रत्येक धनी–निर्धन, राजा–रंक, राजकुमार–आम नागरिक आदि सभी के लिए अनिवार्य बताया था। ऐसे ही वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र परम मेधावी, आत्मसंयमी, प्रखर बुद्धि, विद्याप्रेमी, दृढ़व्रती, धर्मपालन में दृढ़ आस्था रखने वाले, सत्य और अहिंसा के निर्बाध, पक्ष पोषक, शीलवान, ज्ञान पिपासु, विनम्र, प्राणी मात्र के प्रति सौहार्द और सद्भावना रखने वाले तपोधनी, सेवा, त्याग और दया की प्रतिमूर्ति, शक्तिशील आदि सद्गुणों से समलंकृत, अथक परिश्रमी, अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के निर्भीक विरोधी, अहिंसा, प्रेम और क्षमा के समर्थक समस्त परा और अपरा विद्याओं में पारंगत, मानवोचित सद्गुणों से विभूषित, दृढ़चरित्र और दृढ़ प्रतिज्ञ, अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों, प्रतिभा और संस्कारों को विकसित करते हुए श्रेष्ठ नागरिक के रूप में पदार्पण करते थे यह थी गुरुकुलीय शिक्षा की विशेषता और इसी शिक्षा पद्धति को पुनः पूरे मनोयोग से लागू करने के लिए इस सम्मेलन में आर्यों का सागर हिलोरें ले रहा है।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार जहाँ परिसर पर यह ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन आयोजित हुआ। एक आध्यात्मिक नगर के रूप में परिणत हो गया था। चारों तरफ केसरिया ओ३म् ध्वज आर्यों का उत्साह बढ़ा रहे थे। आर्य समाज के इतिहास में इससे पूर्व इतना विशाल पांडाल सम्भवतः पहले कभी नहीं लगा था। ऐसा वॉटरप्रूफ विशाल पंडाल जिसमें एक साथ लगभग 25 हजार व्यक्ति बैठकर सम्पूर्ण कार्यक्रम का आनन्द ले सकते थे। भोजन ग्रहण करने के लिए अत्यन्त आकर्षक दो अलग–अलग वाटरप्रूफ पंडाल लगाये गये थे जिसमें एक तरफ महिलाएँ तथा दूसरे पंडाल में पुरुषों के भोजन की व्यवस्था की गई थी। यह व्यवस्था अपनी अलग छटा बिखेर रही थी। पुस्तक विक्रेताओं के लिए अत्यन्त आकर्षक तथा सुविधा सम्पन्न वाटरप्रूफ स्टॉल बनवाये गये थे जिसमें देशभर से पधारे पुस्तक विक्रेता अध्यात्म की पिपासा शान्त करने के लिए उत्साह के साथ उपस्थित थे। चारो तरफ दूर ध्वनि विस्तारक यंत्र लगाये गये थे जिससे पूरे परिसर में कहीं से भी कार्यक्रम को सुना जा सकता था। पंडाल में चारों तरफ बड़े–बड़े एल.ई.डी. स्क्रीन लगाये गये थे जिन पर सुविधा पूर्वक प्रत्येक कार्यक्रम को देखा जा सकता था। पानी तथा प्रकाश की अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था थी। थोड़ी–थोड़ी दूर पर स्थान–स्थान पर पीने के लिए शुद्ध ठंडे जल के नल लगवाये गये थे। आगन्तुकों की प्रत्येक समस्या को सुलझाने के लिए जगह–जगह विभिन्न कार्यालय बनाये गये थे जिससे किसी भी व्यक्ति को कोई भी परेशानी न हो सके। भोजन तथा जलपान की इतनी सुन्दर व्यवस्था सम्भवतः आर्य समाज के इतिहास में पहली बार की गई थी। प्रातः 6 बजे से लेकर रात्रि लगभग 1 बजे तक जलपान तथा भोजन निरन्तर चलता रहता था। इस ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन में की गई प्रत्येक व्यवस्था अपने आपमें ऐतिहासिक थी।

पांच कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ के लिए विशेष यज्ञशाला का अत्यन्त आकर्षक निर्माण किया गया था। ओ३म् ध्वज तथा ओ३म् की झंडियों से पूरे परिसर को यज्ञमय बना दिया गया था। विशाल मंच पर यज्ञ के ब्रह्मा का आसन तथा वेदपाठी ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों के लिए अलग–अलग मंच बनाये गये थे। सारे वातावरण को यज्ञीय तथा अध्यात्ममय बना दिया गया था।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन निम्न कारणों से ऐतिहासिक सम्मेलन बन सका।

1. यह पहली बार हुआ जब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गुरुकुल परम्परा के संवाहक स्वामी श्रद्धानन्द जी की कार्यस्थली गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के प्रांगण में इतना विशाल अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन आयोजित किया गया।
2. इस ऐतिहासिक सम्मेलन में गुरुकुलों के आचार्यों, विद्वानों, ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का भरपूर अवसर प्रदान किया गया।
3. कई दशकों के बाद गुरुकुल की इस पवित्र पुण्य धरती पर इतना विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवनकाल में इस प्रकार के मेले तथा आयोजन हुआ करते थे। इस महासम्मेलन–मेले को देखकर पुनः वह दृश्य याद आ रहा था जो स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवनकाल से सम्बन्धित इतिहास में पढ़ा जाता है।
4. वैदिक विद्वानों का महासमागम इस सम्मेलन में दिखाई दिया। सम्पूर्ण महासम्मेलन के दौरान 100 से अधिक वैदिक विद्वानों और उच्चकोटि के आर्य संन्यासियों एवं कर्मठ आर्यनेताओं ने अपने उद्बोधन प्रस्तुत कर आर्य जनता को सोद्देश्य मार्गदर्शन प्रदान किया।
5. अत्यन्त आकर्षक तथा विशाल वॉटरप्रूफ पंडाल और भोजन तथा जलपान के लिए ऐसे ही दो अलग विशाल पंडाल तथा पुस्तक विक्रेताओं के लिए अत्यनत सुविधाजनक, आकर्षक वाटरप्रूफ स्टाल लगाये गये थे, जो आर्य समाज के इतिहास में पहली बार दिखाई दिये।
6. महासम्मेलन के तीनों दिन पांच कुण्डीय विशेष यज्ञ तथा विशेष रूप से सजाया गया मंच विशेष आकर्षण का केन्द्र था। इस अवसर पर अनेकों गणमान्य व्यक्ति प्रतिदिन यजमान के रूप में आसन ग्रहण करते थे। प्रतिदिन दोनों समय होने वाले यज्ञ में अलग विद्वान ब्रह्मा के पद पर आसीन होते थे तथा अलग–अलग गुरुकुलों के ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियाँ अत्यन्त आकर्षक ढंग से सस्वर वेद पाठ करते थे। तीनों दिन वैदिक विद्वानों के प्रवचनों से आर्य जनता ने भरपूर आध्यात्मिक लाभ उठाया।
7. इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत के लगभग सभी प्रान्तों से दूर–दराज क्षेत्रों से आर्यों के झुण्ड तथा गुरुकुल के आचार्य–आचार्याएँ एवं ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियाँ भारी संख्या में सम्मेलन में पधारे।
8. इस महासम्मेलन में आयोजित सभी सत्रों को पूर्ण विद्वता तथा गम्भीरता के साथ आयोजित किया गया था। गुरुकुलीय शिक्षा को प्राथमिकता देते यह सत्र विशेष रूप से गुरुकुलों के विद्वानों, आचार्यों के संयोजन में सम्पन्न किये गये। बीच–बीच में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों के सामूहिक रूप से आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। जिससे उनकी प्रतिभा का दिग्दर्शन आम जनता को प्राप्त हुआ।
9. पूरे देश के गुरुकुलों का एक स्थान पर एकत्रित होना अपने आपमें एक विशेष उपलब्धि रही तथा श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का गठन हुआ।
10. इस महासम्मेलन में देशभर के प्रतिष्ठित संन्यासीगण तथा विरक्त मण्डल के संन्यासियों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।
11. गुरुकुलों की प्रदर्शनी भी एक आकर्षण का केन्द्र रही। इस प्रदर्शनी में समस्त गुरुकुलों का विवरण उनके कार्य तथा उनकी विशेष उपलब्धियों का चित्रण किया गया था।
12. विशाल शोभायात्रा का आयोजन सम्मेलन के दूसरे दिन मध्यान्ह में किया गया था। लगभग 2 किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा में अपने–अपने समाज, गुरुकुल, संस्था के बैनर लिये हजारों प्रतिभागियों ने पूरे हरिद्वार नगर को जयघोषों, भजनों तथा आर्यवीरों के विभिन्न आकर्षक मनमोहक आसनों, करतबों से रोमांचित कर दिया। शोभा यात्रा में भाग ले रहे हजारों गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियाँ स्ववेशों में अलग आकर्षण का केन्द्र रही।
13. इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में पधारे समस्त संन्यासियों, विद्वानों, कर्मठ कार्यकर्ताओं, गुरुकुल के आचार्य एवं आचार्याओं का सम्मान विशेष रूप से किया गया।
14. अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन को समर्थन देने, सार्थक करने तथा सफल बनाने के लिए हजारों आर्यों का समागम अपने आपमें एक अलग उपलब्धि रही।
15. महासम्मेलन में भारी संख्या में पधारे आर्य महानुभावों तथा गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों तथा गणमान्य व्यक्तियों के लिए आवास की अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था की गई थी। पूरे हरिद्वार के होटलों, गेस्ट हाउसों, धर्मशालाओं तथा आश्रमों को पूर्व में ही आरक्षित करा लिया गया था जिसमें आगन्तुक महानुभाव अत्यन्त सुविधा के साथ निवास करते रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी ध्वजारोहण करते हुए

सम्मेलन के अन्तर्गत होने वाले चतुर्वेद शतक महायज्ञ जो प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल को सम्पन्न होता था। उसके प्रथम दिवस ब्रह्मा पद को आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने सुशोभित किया। वेद पाठ कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली, देहरादून तथा गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों ने किया। संयोजक डॉ. रविन्द्र कुमार (हरिद्वार) तथा सह–संयोजक श्री शिवदेव आर्य गुरुकुल पौंधा देहरादून रहे। मुख्य यजमान के रूप में दीनानगर (पंजाब) से पधारे श्री अरविन्द मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुरभाषिणी उपस्थित थे। सायंकालीन यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्या नंदिता देवी जी पाणिनी संस्कृत कन्या महाविद्यालय बनारस ने सुशोभित किया। संयोजक रहे श्री सोमदत्त शास्त्री चण्डीगढ़, वेदपाठ पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस, कन्या गुरुकुल सासनी, गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल तथा गुरुकुल मंछावली के ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया। मुख्य यजमान रहे श्रीमती मधुरभाषिणी तथा श्री अरविन्द मेहता दीनानगर, श्रीमती नीरज नरूला एवं श्री संजीव नरूला यमुनानगर, श्री रघुवीर सिंह आर्य शामली तथा श्री आनन्द प्रकाश आर्य हापुड़।

7 जुलाई, 2018 को ब्रह्मा पद को डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, कन्या गुरुकुल शिवगंज ने सुशोभित किया तथा संयोजक रहे श्री महेन्द्र भाई महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्। वेद पाठ गुरुकुल नोएडा, गुरुकुल बरनावा, गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल, कन्या गुरुकुल शिवगंज, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, कन्या गुरुकुल रुड़की के ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों ने अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया। सायंकाल के यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने। संयोजक रहे अंकित आर्य अमरोहा। वेद पाठ कन्या गुरुकुल जसात, कन्या गुरुकुल लोआकलां, कन्या गुरुकुल पंचगांव, गुरुकुल नरसिंहनाथ, गुरुकुल दखौला तथा गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों ने किया। स्वामी विदेह योगी का प्रवचन हुआ।

8 जुलाई को प्रातःकाल यज्ञ की ब्रह्मा रही आचार्या प्रियंवदा वेदभारती तथा संयोजक रहे डॉ. योगेश शास्त्री जी एवं वेदपाठ किया गुरुकुल गौतमनगर, गुरुकुल पौंधा तथा गुरुकुल मंझावली के ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों ने। मुख्य यजमान रहे श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, श्री हरिकेश जी, रवीश जी सपत्नीक, डॉ. गजराज सिंह आर्य श्रीमती राजेश कुमारी सपत्नीक तथा तेलंगाना से पधारे श्री एन. सी. हरि सपत्नीक, श्री अरविन्द मेहता तथा पत्नी श्रीमती मधुरभाषिणी।

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आनन्दवेश जी शुक्रताल, श्री लाजपतराय चौधरी करनाल तथा स्वामी श्रद्धानन्द पलवल के उपदेश हुए।

प्रतिदिन यज्ञोपरान्त प्रतिष्ठित संन्यासियों तथा विद्वानों के प्रवचन होते रहे एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणादाई उद्बोधन होता रहा।

प्रतिदिन यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण का विशेष आयोजन होता था। 6 जुलाई, 2018 को ध्वजारोहण आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी ने किया तथा उनका सहयोग सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी एवं सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने किया। श्री गोविन्द सिंह भण्डारी विशिष्ट अतिथि रहे।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन का उद्देश्य सदाचार का निर्माण करना है, यही शिक्षा का मूल होना चाहिए। केवल डिग्री प्राप्त करने से सदाचार नहीं आता। संकल्प, आचार, व्यवहार का बीज है। उन्होंने कहा कि आज समाज में बेशक ज्ञान का विस्फोट दिखाई दे रहा हो लेकिन उसमें संकल्प का अभाव है। आज की शिक्षा केवल अर्थ प्रधान बन चुकी है। मानव को मानव बनाने का कार्य केवल गुरुकुल ही कर सकता है। डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि वर्तमान में प्रचलित शिक्षा पद्धति में छात्रों का राजनीतिकरण किया जा रहा है। जबकि आवश्यकता उनके राष्ट्रीयकरण की है और यह कार्य केवल गुरुकुलों के द्वारा ही सम्भव है।

स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी चन्द्रवेश जी तथा स्वामी रामवेश जी का मिला आशीर्वाद

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी उद्बोधन देते हुए

7 जुलाई, 2018 को ध्वजारोहण पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार चौ. हरि सिंह सैनी जी ने किया तथा 8 जुलाई, 2018 को ध्वजारोहण सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट ने किया।

प्रातः 11 बजे से गुरुकुल परिचय सम्मेलन का आयोजन प्रारम्भ हुआ इस सम्मेलन की अध्यक्षता वयोवृद्ध आर्य संन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती ने की तथा संयोजन श्री रामपाल शास्त्री जी ने किया। सम्मेलन का प्रारम्भ गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों ने मंगलाचरण करके किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान तथा जिनके दृढ़ संकल्प, दूरदृष्टि, ईश्वर पर अगाध विश्वास तथा अहर्निश परिश्रम ने इस महासम्मेलन को अभूतपूर्व सफलता तक पहुँचाया, इस ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन करने के उद्देश्य को इंगित करते हुए कहा कि देश में प्रचलित वर्तमान शिक्षा प्रणाली जिसकी पूरे देश में कटु आलोचना की जा रही है उसमें आमूल–चूल परिवर्तन करने के उद्देश्य से यह महासम्मेलन आयोजित किया गया है। मैकाले द्वारा प्रदत्त शिक्षा पद्धति के कारण युवाओं में हो रहे चारित्रिक पतन, देश में व्याप्त बेईमानी, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, ईश्वर पर अविश्वास, महिलाओं पर अत्याचार आदि सामाजिक बुराईयाँ जो पंनप रही हैं वह वर्तमान शिक्षा प्रणाली की देन है। इन समस्त सामाजिक बुराईयों को जड़मूल से समाप्त करने के लिए एक मात्र विकल्प गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली है। गुरुकुलों के स्तर को सुधारने, उनके पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने तथा एक केन्द्रीय बोर्ड बनाने के लिए इस सम्मेलन में गम्भीर विचार किया गया। स्वामी जी ने कहा मैकाले द्वारा सड़ी–गली अधूरी और लंगड़ी शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को प्रारम्भ करने का प्रस्ताव भारत सरकार को भेजा जायेगा। उन्होंने कहा कि समस्त गुरुकुलों को एक सूत्र में बाँधकर विश्वविद्यालय के साथ समायोजित करने की योजना हमलोग बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त सभी गुरुकुलों में एक समान पाठ्यक्रम पढ़ाये जाने की व्यवस्था भी की जा रही है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुलों का कायाकल्प किया जाना चाहिए। वर्तमान विषयों के साथ आधुनिक विषयों को भी पाठ्यक्रम में शामिल करने की महती आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि मानव का सर्वांगीण विकास चरित्र निर्माण, सादा जीवन उच्च विचार, समान शिक्षा व्यवस्था, मूल्याधारित शिक्षा व्यवस्था, प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं वैदिक ज्ञान के प्रति प्रेम तथा प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा का समायोजन, ये है गुरुकुलीय शिक्षा की विशेषताएँ। स्वामी जी ने कहा कि सरकार ने शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करने के लिए कोठारी समिति बनाई है। यह समिति शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की सम्भावनाएँ तलाश करेगी। हमारा प्रयास है कि इस समिति के समक्ष आर्य समाज के विद्वानों द्वारा तैयार किया जाने वाला प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाये। जिससे वे अपने चिन्तन द्वारा एक उच्च स्तर की शिक्षा पद्धति लागू करवा सकें। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मतलब डिग्री प्राप्त करना नहीं है। शिक्षा संस्कृति का आधार और उन्नायक है। शिक्षा का सम्बन्ध ज्ञानार्जन विषय को पदार्थों के तत्वों का ज्ञान, संसार की प्रत्येक वस्तु के स्वरूप का ज्ञान और उसकी उपयोगिता का आंकलन करने के साथ ही मनुष्य के विवेक को प्रबुद्ध करना भी है। शिक्षा के दो रूप हैं – एक ओर वह बालक की चिन्तन शक्ति को प्रबुद्ध करके उसके कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य आदि का बोध कराती है और उसके जीवन का लक्ष्य बताती है। दूसरी ओर बालक की आन्तरिक शक्ति का विकास करके उसे आत्म–चिन्तन, आत्मबोध और तत्त्वज्ञान की ओर प्रवृत्त करती है। इन दोनों स्वरूपों में मूल अन्तर यही है कि एक में बालक की दृष्टि बाहरी संसार की ओर रहती है और वह भौतिक सुख–सुविधाओं; भौतिक उन्नति और भौतिक समृद्धि की ही कामना करती है। दूसरी ओर बालक की अन्तर्दृष्टि सूक्ष्म होती चली जाती है और वह अन्दर की ज्योति जिसे आत्मा कहते हैं के दर्शन के लिए प्रयत्नशील होता है। उसकी दृष्टि स्थूल से सूक्ष्म की ओर, भौतिक से अध्यात्म की ओर, सकामता से निष्कामता की ओर होती है। यही गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति है। स्वामी जी ने कहा कि समय रहते यदि हमने गुरुकुलों और गुरुकुल शिक्षा पद्धति की सुरक्षा नहीं की, शक्ति प्रदान नहीं की, सरकार से मजबूती नहीं दिलाई तो आने वाले समय में भारत पर पाश्चात्य संस्कृति का कब्जा पूरी तरह से हो जायेगा। आज हमारे गुरुकुल प्राचीन भारतीय संस्कृति का झण्डा उठाये हुए हैं उन्हें कितना परिश्रम और संकट झेलना पड़ता है यह सभी को पता है। अतः गुरुकुलों को सुरक्षा, संरक्षण और शक्ति प्रदान करने के लिए हम सब तत्पर हैं और इसी उद्देश्य से यह विशाल आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर दिल्ली के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी और स्वामी प्रणवानन्द जी को नमन करते हुए इतने विशाल आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह आयोजन कोई छोटा–मोटा आयोजन नहीं है। आप सब इतनी बड़ी संख्या में आये हैं मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि जिस श्रद्धा से, जिस पवित्र संकल्प से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस गुरुकुल की स्थापना की थी क्या आज हमारे मन में वही श्रद्धा व संकल्प विद्यमान है, यह विचारणीय है। आज भारत के विभिन्न प्रान्तों में सैकड़ों गुरुकुल संस्कृत शिक्षण और मानव के सर्वांगीण विकास में संलग्न हैं। इन सभी गुरुकुलों को एकीकृत करके एक समान पाठ्यक्रम बनाने की आवश्यकता है और गुरुकुलों को भी पूरे देश में खोला जाना चाहिए। शास्त्री जी ने कहा कि सभी आर्यजन मिलकर परस्पर सहयोग की भावना से ऋषि तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ायें। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल के रूप में विद्या का जो दीपक जलाया है उसे मन्द न होने दे, अपितु उसकी लौ को निरन्तर आगे बढ़ाते रहें। सभी गुरुकुलों की रक्षा और अभिवृद्धि करना ही हमारा पुनीत कर्त्तव्य होना चाहिए।

इस अवसर पर विभिन्न गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्याओं तथा विद्वानों का सम्मान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी तथा स्वामी आर्यवेश जी आदि ने किया।

इस सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सभी लोग तथा गुरुकुल भावनात्मक रूप से जुड़ें और एक–दूसरे का सहयोग करें। सभी गुरुकुलों के आचार्यगण आपस में सम्पर्क में रहें और वार्ता आदि करते रहें तथा पूरा गुरुकुल परिवार एक सूत्र में बंधे यही कामना है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल एक पवित्र संस्था है। यहाँ पर मानव का निर्माण होता है, उसे हर क्षेत्र में सुयोग्य बनाया जाता है। गुरुकुलों की कार्य प्रणाली में कुछ परिवर्तन भी आवश्यक है।

इस अवसर पर पूरे देश के गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्याओं ने अपना परिचय तथा अपनी उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया।

सभी गणमान्य अतिथियों, संन्यासियों तथा विद्वानों का स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी तथा पं. माया प्रकाश त्यागी जी आदि ने अंगवस्त्र प्रदान कर, शॉल उढ़ाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान किया।

सायं 4 बजे अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का उद्घाटन समारोह भव्यता के साथ आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता अनेकों गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी ने की तथा संयोजन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया।

मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी मुख्यअतिथि के रूप में पधारे तथा उनके सम्मान में सर्वप्रथम राष्ट्रगान हुआ। तत्पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने समवेत स्वर में मंगलाचरण का पाठ किया। मंगलाचरण के उपरान्त दीप प्रज्ज्वलन भारतीय संस्कृति के प्रबल पोषक तथा विश्व प्रसिद्ध योगगुरु स्वामी रामदेव जी ने किया। इस कार्य में उनका सहयोग मेघालय के राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने किया। महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी का स्वागत तथा सम्मान स्वामी आर्यवेश जी ने पुष्प गुच्छ भेंटकर किया। स्वामी प्रणवानन्द जी ने अंगवस्त्र तथा मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी ने शॉल भेंटकर उन्हें सम्मानित किया। स्वामी अग्निवेश जी ने राज्यपाल महोदय को स्मृति चिन्ह भेंट किया। इसी प्रकार योगगुरु स्वामी रामदेव जी का स्वामी प्रणवानन्द जी ने अंगवस्त्र भेंटकर अभिनन्दन किया। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी रामदेव जी को शॉल उढ़ाकर सम्मान किया। स्वामी अग्निवेश जी ने स्मृति चिन्ह भेंटकर अभिनन्दन किया तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी रामदेव जी को पुष्प गुच्छ भेंट किया। महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी ने भी स्वामी रामदेव जी को शॉल उढ़ाकर सम्मानित किया।

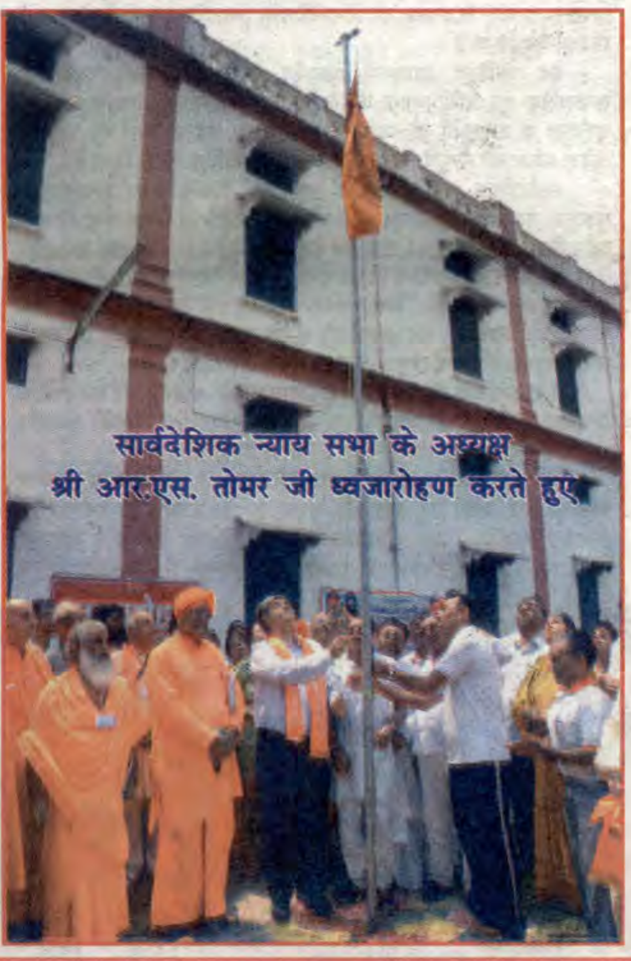
सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री आर.एस. तोमर जी ध्वजारोहण करते हुए

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि हमारी संस्कृति में सोलह संस्कारों का बहुत महत्त्व है। बालक के जन्म से पहले से लेकर मृत्यु–पर्यन्त सोलह संस्कार किये जाते हैं और यह संस्कार बालक के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं। उन्होंने कहा कि जब तक आचार्य और शिष्य का व्यवहार एकरूप नहीं होता तब तक शिक्षा में पारंगत नहीं हुआ जा सकता। उन्होंने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा द्वारा मानव का निर्माण होता है। गुरुकुल का पढ़ा हुआ ब्रह्मचारी सुसंस्कृत होता है, अनुशासित होता है तथा राष्ट्रभक्ति का उसमें समावेश होता है। अनाचार, पाखण्ड और सामाजिक बुराईयों को यदि मिटाना है तो गुरुकुलीय शिक्षा को अपनाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यह गुरुकुल महासम्मेलन पहली बार होने जा रहा है। आप सबको गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का प्रसार करने में सहयोग प्रदान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे देश की सरकार को गुरुकुलों को प्रोत्साहित तथा शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। स्वामी प्रणवानन्द जी के उद्बोधन के पश्चात् गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने स्वागतगान प्रस्तुत किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज और गुरुकुलों ने बड़े कष्ट सहकर अथक परिश्रम करके हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति को जिन्दा रखा है और देश को नई दिशा प्रदान की है। आज भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है। भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए, उसके पुनरूत्थान करने के लिए भारत को फिर से विश्वगुरु बनाने के लिए गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का प्रसार करना होगा। पाश्चात्य संस्कृति की ओर भागते युवावर्ग को भारतीय संस्कृति की ओर मोड़ने में वेद की शिक्षा महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी रामदेव जी से मिलने के बाद मैंने अनुभव किया है कि आर्य समाज में एक नई हलचल होने वाली है। उन्होंने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि आर्य समाज एक होगा और वह भी स्वामी रामदेव जी के द्वारा होगा। स्वामी जी ने कहा कि इस महासम्मेलन को आयोजित करने के पीछे जो भाव है वह यह है कि मैकाले द्वारा प्रदत्त विषाक्त शिक्षा पद्धति के विकल्प के रूप में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को सामने लाया जाये। उन्होंने कहा कि हम गुरुकुलों को बहुत मजबूत बनाना चाहते हैं। गुरुकुलों में सभी प्रकार की सुविधाएँ हों तथा गुरुकुलों के आचार्य अपना पूरा समय ब्रह्मचारियों के निर्माण पर लगायें। उन्हें गुरुकुल चलाने के लिए दर–दर भटकना न पड़े। स्वामी जी ने कहा कि आर्ष शिक्षा पद्धति में यम–नियम का बहुत महत्त्व है और यह जीवन को उन्नत बनाने के ऐसे सूत्र हैं जिन पर किसी भी धर्म या पंथ का विरोध नहीं हो सकता। अतः ऐसे प्रावधान शिक्षा पद्धति में होने चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बहुत बड़ा अभियान बनाकर हम आगे बढ़ेंगे और महामहिम राज्यपाल जी और स्वामी रामदेव जी आर्य विचारधारा के प्रबल पोषक हैं इनका हमें इस कार्य में भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन की भूमिका का परिचय देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा इस पूरे सम्मेलन के संयोजक प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि गुरुकुल महासम्मेलन का आयोजन इतिहास में पहली बार हरिद्वार की पुण्य भूमि पर किया जा रहा है। आर्य समाज का जन्म वैदिक संस्कृति के संरक्षण और पोषण के लिए हुआ था। आर्य समाज का यह अन्तर्राष्ट्रीय विशाल संगठन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गूढ़ चिन्तन और गम्भीर प्रयासों का ही फल है। महर्षि के प्रत्येक विचार का प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध वेद की संस्कृति से जाकर मिलता है। इस संस्कृति पर आधारित सिद्धान्त ही हमारे जीवन का मूलाधार है। यहाँ तक कि हमारे राष्ट्रवाद की कल्पना भी भौगोलिक सीमाओं पर ही नहीं अपितु इस भूमण्डलीय संस्कृति पर टिकी है। गुरुकुलीय जीवनशैली व्यक्ति तक ही सीमित न हो करके उसका अपना सामाजिक, आर्थिक पक्ष भी है जो विकास की विलक्षण अवधारणा को प्रस्तुत करता है और यही वह बात है जहाँ हम आज की शिक्षा तथा विकास की वैकल्पिक प्रणाली को प्रस्तुत कर सकते हैं। विगत 100 से अधिक वर्षों में हमारे गुरुकुलों ने वैदिक संस्कृति के संरक्षण और पोषण में मूल केन्द्रों की भूमिका निभाई है। गुरुकुल आर्य समाज के प्राण हैं, ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। गुरुकुलों के संरक्षण, पोषण और इन पवित्र संस्थाओं की संख्या में वृद्धि को हमने अपना प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने कहा कि योजनाबद्ध तरीके से इन महान संस्थाओं की वृद्धि तथा इनमें नई जान फूंकने के लिए ठोस उपाय किये जायेंगे। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के केन्द्रों में शैक्षणिक एकरूपता का प्रयास भी हमारा गम्भीर लक्ष्य है। इसके अतिरिक्त समस्त गुरुकुलों को संगठनात्मक एकता रूपी माला में पिरोना भी उसी लक्ष्य का अंग है। सभा मंत्री जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति ने कथनी से अधिक करनी के सिद्धान्त की स्थापना की है। उपदेश से अधिक अपने निज आचरण और व्यवहार को परिलक्षित किया है। केवल मात्र यही पद्धति आज के व्यक्ति को प्राचीनता के मूल से जोड़कर आधुनिकता के लक्ष्य की ओर बढ़ने का मार्गदर्शन और माध्यम उपलब्ध करा सकती है। उन्होंने कहा कि आर्ष शिक्षा प्रणाली के माध्यम से परिवार, समाज तथा देश में आमूल–चूल परिवर्तन किया जा सकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व को देश और दुनिया के सामने रखा जाये। आज पुनः उसी शिक्षा पद्धति को वैकल्पिक शिक्षा के रूप में सारे देश में प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से यह ऐतिहासिक गुरुकुल सम्मेलन आयोजित किया गया है। पाश्चात्य संस्कृति के व्यामोह में फंसा आज का युवा वर्ग अपने नैतिक आचरण को भुला बैठा है। संक्रांति के इस दौर में शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या हो, इसका स्वरूप क्या हो और इसके लिए क्या आवश्यक है यह चिन्तन का विषय है। अपने गुरुकुलों को

महासम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी उद्बोधन देते हुए

आर्थिक रूप से मजबूत करना हम सबका दायित्व है। हमारे गुरुकुल शक्ति सम्पन्न हों और आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ हों, इसके लिए हम सरकार से आर्थिक सहायता तथा विशेष पैकेज की भी माँग करेंगे। प्रो. साहब ने कहा कि विकासवाद का भौतिकवादी मॉडल सारे विश्व में फैलाया जा रहा है। जिसमें अनेकों विसंगतियाँ हैं। सारा विश्व नैतिक मूल्यों के गिरते स्तर से चिन्तित है। इन सब समस्याओं का एक निदान है और वह है गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पूरे विश्व में फैलाना। क्योंकि यह शिक्षा पद्धति त्याग पर आधारित है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' पर आधारित है। अतः नये भारत के निर्माण की कल्पना को साकार करने में आप सब तन–मन–धन से सहयोग करें।

इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने उद्बोधन में आर्ष शिक्षा पद्धति को दर्शाते हुए इसे आगे बढ़ाने के लिए सभी से सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति भारत की ही आवश्यकता नहीं है अपितु पूरे विश्व की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को ही नहीं, सारे राष्ट्र को ही नहीं अपितु पूरे विश्व की उच्च्व संस्कृति को बचाने के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को अपनाना पड़ेगा। स्वामी जी ने कहा कि जो संस्कृत नहीं पढ़ा वह अधूरा है।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा कि जिन भावनाओं और उद्देश्यों को लेकर यह महासम्मेलन आयोजित किया गया है उसे पूर्ण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जायेगी। क्योंकि आर्य समाज जो ठान लेता है उसे करके मानता है। उन्होंने आर्यों से कहा कि अपनी ताकत को पहचानों और आगे बढ़ो।

विधायक आदेश चौहान जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हरिद्वार की इस पवित्र भूमि पर आप सबका हार्दिक स्वागत है। उन्होंने आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से स्वतंत्रता आन्दोलन में 85 प्रतिशत आर्यसमाजियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया था। देश को स्वतंत्र कराने में सबसे बड़ा योगदान आर्य समाजियों का है। उन्होंने कहा कि मेरा परिवार भी आर्य समाज में आस्था रखता है। श्री आदेश चौहान ने देश में पैर पसार रही सामाजिक बुराईयों की तरफ ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि केवल आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जो इन बुराईयों से मुकाबला कर सकती है। उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को देश के लिए आवश्यक बताया।

इस अवसर पर गुरुकुलीय शिक्षा के प्रबल समर्थक तथा विश्व प्रसिद्ध योगगुरु स्वामी रामदेव जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द न होते तो स्वामी रामदेव भी न होते। उन्होंने कहा कि आज दुनियां वाले कहते हैं कि अब आक्सफोर्ड व हावर्ड वाले पीछे छूट गये हैं और गुरुकुल वाले उनसे आगे बढ़ गये हैं। स्वामी रामदेव जी ने कहा कि हम ऋषि परम्परा और आर्य मान्यताओं को मानते हैं। स्वामी जी ने कहा कि वे जो कहते व चाहते हैं वैसा ही हो जाता है। उन्होंने कहा कि हम वेद को मानने वाले हैं। आर्यसमाज एक हो जायेगा तो दुनिया से पाखण्ड व अन्धविश्वासों का अन्त हो जायेगा। उन्होंने कहा कि पाखण्ड एवं अन्ध विश्वासों का समाधान महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज के विद्वानों और ऋषि भक्तों को देश के लोगों को ईश्वर का सच्चा स्वरुप बताना चाहिये। सभी पाखण्डों एवं अंधविश्वासों का पूरे दम खम के साथ खण्डन करना चाहिये।

स्वामी रामदेव जी ने आगाह करते हुए कहा कि दलितों, शोषितों, वंचितों को आर्यसमाज से लड़ाने की कोशिश की जा रहीं हैं। उन्होंने कहा कि केवल राजनैतिक आजादी से देश स्वतन्त्र नहीं हो जाता। उन्होंने कहा कि वैचारिक स्वतन्त्रता के साथ देश के नागरिकों को देश के इतिहास व ज्ञान से युक्त परम्पराओं का भी सम्मान करना चाहिये। स्वामी रामदेव जी ने कहा कि मैकाले की शिक्षा पद्धति ने देश को एक मशीन बना दिया है। हमें वेदों की शिक्षा से देश के लोगों का समग्र व दिव्य विकास करना है। उन्होंने कहा कि मनुष्य परमात्मा की श्रेष्ठ रचना है। उसे जाग्रत करने का काम शिक्षा का है। स्वामी जी ने बताया कि उन्होंने बचपन में ही आर्योद्देश्यरत्नमाला, सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषि दयानन्द के अनेक ग्रन्थों को कम से कम तीन बार पढ़ लिया था।

स्वामी रामदेव जी ने कहा कि गुरुकुल मानव जीवन निर्माण वा मनुष्य जीवन बनाने की श्रेष्ठ पद्धति है। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से मानव जीवन का समग्र विकास होता है। उन्होंने कहा कि जो मनुष्य गुरुकुल पद्धति से दीक्षित हो गया वह देवत्व व ऋषित्व की ओर अग्रसर होता है। स्वामी जी ने गुरुकुलों की चुनौतियों की भी चर्चा की। स्वामी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी की आर्ष पाठ विधि की हम हरिद्वार व उत्तराखण्ड में व्यवस्था होगी। स्वामी जी ने श्रोताओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि आगे 8–10 वर्षों में आप देखेंगे कि मैकाले के विकल्प के रुप में आर्ष शिक्षा पद्धति की व्यवस्था कर दी जायेगी। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य का निर्माण हमारे गुरुकुलों की पाठ विधि से कम अपितु वहां की दिनचर्या और जीवन पद्धति से अधिक होता है। उन्होंने गुरुकुल में ब्रह्मचारियों के चार बजे शय्या त्याग करने, प्रार्थना मंत्र बोलने, व्यायाम व योग करने, सन्ध्या व यज्ञ करने, गुरु के सान्निध्य में रहने और सायं यज्ञ करने सहित रात्रि को मन्त्र बोल कर शयन करने की जीवन पद्धति को जीवन निर्माण का महत्वपूर्ण अंग बताया।

स्वामी जी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे यहां ब्रह्मचारियों से अधिक गुरुकुलों की ब्रह्मचारणियां नजर आ रही हैं। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुल हमारी मातृ संस्था है। उन्होंने कहा समय समय पर आचार्य बालकृष्ण जी और मैं विचार करते हैं कि हम गुरुकुलों के लिए क्या कर सकते हैं। स्वामी जी ने घोषणा की कि आगामी दिनों में वेदों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था वाला एक विश्वविद्यालय बनाया जायेगा जहाँ 1 लाख से अधिक ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारणियाँ अध्ययन कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि हम से जो बन पायेंगा वह हम गुरुकुलों के लिए करेंगे।

स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज के लोगों की संख्या 4–5 करोड़ तो है ही। राजनीतिक दल आर्यसमाज की बात नहीं सुनते। उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाजी संगठित हों जायें तो राजनीतिक दल हमारी उपेक्षा नहीं कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद का अन्तिम सन्देश 'संगठन–सूक्त' है। हममें संगठन व राष्ट्र निष्ठा होनी चाहिये। इसके लिए हमें व्यक्तिगत अहंकार को नीचे लाना पड़ेगा।

स्वामी रामदेव जी ने कहा कि अभी कुछ दिन पूर्व गुरुकुल सम्मेलन के लिए स्वामी आर्यवेश जी हमारे यहां आये थे और उसके बाद दिल्ली सम्मेलन के लिए श्री सुरेश अग्रवाल जी व श्री विनय आर्य आदि भी आये। मैंने उनसे संगठन के हित में मतभेद दूर कर एकता करने के लिये निवेदन किया। उन्होंने अपनी ओर से मुझे इस कार्य को करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि आप जो कहेंगे हम उसे मानेंगे। मैंने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी इसके लिए तैयार हो जायेंगे। स्वामी अग्निवेश जी मंच पर उपस्थित थे। स्वामी रामदेव जी ने स्वामी अग्निवेश जी को इस कार्य के लिए अपनी स्वीकृति देने का अनुरोध किया। इस पर स्वामी अग्निवेश जी ने भी अपनी सहमति व्यक्त कर दी। इस पर पूरे पण्डाल ने हर्षध्वनि के साथ स्वागत किया। स्वामी रामदेव जी ने घोषणा की कि वह कोशिश करेंगे कि अक्तूबर, 2018 के दिल्ली आर्य महासम्मेलन से पूर्व हम सब एक हो जायें और उस सम्मेलन में हम सब एक साथ भाग लें।

इस अवसर पर मेघालय के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत के भविष्य के निर्माण का संकल्प अपने हृदय में संकल्पित करने वाले महान् आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना कर वैदिक गौरव गाथा का उद्गान किया था। प्राच्य एवं अर्वाच्य विद्याओं के अध्ययन–अध्यापन एवं उच्चस्तरीय अनुसंधान एवं प्रकाशन के केन्द्र के रुप में गुरुकुल का मुख्य स्थान रहा है। मानव निर्माण एवं विश्वकल्याण के केन्द्र के रुप में गुरुकुल की स्थापना महर्षि दयानन्द के उद्घोष के अनुरुप स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा 4 मार्च 1902 को भगवती भागीरथी के पावन तट पर प्राचीन भारतीय आदर्शों एवं जीवन मूल्यों को साकार रुप प्रदान करने के लिए गुरुकुलीय परम्परा के पुनरावर्तन के रुप में हुई थी। इन महापुरुषों का यह दृढ़ विश्वास था कि वेद–विद्या के प्रचार–प्रसार और उन्नयन से ही देश का निर्माण होगा, जब तक वेद में छिपे हुए रहस्यों को संसार के समक्ष नहीं रखा जायेगा, तब तक अविद्या अन्धकार दूर नहीं होगा।

शतपथ ब्राह्मण के "मातृमानपितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद" के अनुसार बालक के तीन गुरु माता, पिता और आचार्य होते हैं। माता–पिता और आचार्य के प्रति बालक की श्रद्धा ही उनके जीवन में आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि का संचार करती है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

श्रद्धापूर्वक बालक आचार्य के चरणों में बैठकर ज्ञान प्राप्ति करता है, तो वह श्रद्धा की अग्नि में स्वयं को समिधा बनाकर उस ज्ञानाग्नि में तपकर कुन्दन बन जाता है, क्योंकि –

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धिन वचसा वेदयामसि।।

इस वेदवाक्य के अनुसार श्रद्धा सत्य में स्थित है, और हृदय में स्थित सच्ची श्रद्धा ही ईश्वर मिलन अर्थात् मोक्ष के मार्ग को प्रशस्त किया करती है।

गुरुकुल त्याग, तपस्या और साधना की तपस्थली हैं, इस ज्ञान की अग्नि में स्वजीवन को तपाकर अनेकों प्रतिभावान स्नातकों ने गुरुकुल एवं भारत माता की गौरवगाथा को दिग्–दिगन्त तथा विद्वत्मण्डली के मध्य में गौरवान्वित किया है।

वेद, साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद, योग, पत्रकारिता, राजनीति, समाजसेवा एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के रक्षण एवं संवर्द्धन आदि में गुरुकुल के स्नातकों की पहचान ने राष्ट्र को वेद के मार्ग पर चलकर वैदिक ध्वजा को सम्पूर्ण विश्व में फहराने का अप्रतिम संदेश दिया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में गुरुकुलों की उपयोगिता पर किया गया चिन्तन वर्तमानिक समस्याओं का समाधान है। देश–विदेश में संचालित गुरुकुलों का एक स्थान पर एकत्रित होकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने पर गम्भीर चिन्तन करके ठोस योजना तैयार करना निःसंदेह ऐतिहासिक कार्य है। मेरी जानकारी में यह पहला महासम्मेलन है जिसमें समस्त गुरुकुल एकत्र होकर चिन्तन–मनन कर रहे हैं।

मैं सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने इस आवश्यक विषय पर मन्थन कराकर समस्त विश्व को नूतन चिन्तन का सुअवसर प्रदान किया है।

इस महासम्मेलन के आयोजन की सफलता की शुभकामनाओं के साथ मैं आप सभी को आश्वस्त करता हूं कि गुरुकुलीय परम्परा के उन्नयन में यदि मैं कुछ योगदान कर पाया तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा। पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के सान्निध्य में इस महासम्मेलन का प्रभाव और भी अधिक बढ़ गया है तथा इसमें लिए जाने वाले निर्णय और भी अधिक प्रभावी होंगे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

यह गुरुकुल महासम्मेलन पूर्णतः सफल हो तथा गुरुकुलीय शिक्षा में दक्ष छात्र विश्व को नवोन्मेष प्रगति प्रदान करें, ऐसी ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।

इस अवसर पर विश्व प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी रामदेव जी ने आर्य समाज की एकता के लिए जो प्रस्ताव रखा है उसका मैं समर्थन करता हूँ और वो जैसा कहेंगे उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। मैं चाहता हूँ कि आर्य समाज एक हो। उन्होंने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि जब से स्वामी आर्यवेश जी ने संन्यास लिया है उनमें ऊर्जा का आश्चर्यजनक संचार हो गया है। वे 18–18 घण्टे आर्य समाज का ही कार्य करते रहते हैं। उनके नेतृत्व में आर्य समाज पुनः बुलन्दियों को छुयेगा। स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्वीकृत प्रणाली है और इसका विस्तार होना ही चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि आज यह भारी जन–सैलाब गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का हृदय से स्वागत कर रहा है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का इतिहास बदल रहा है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक जी को स्वामी रामदेव जी ने मंच पर आमंत्रित किया और उनका सम्मान किया और उन्हें सम्मानस्वरूप एक लाख रुपये देने की घोषणा की। श्री पथिक जी का सम्मान स्वामी रामदेव जी, स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने किया। स्वामी रामदेव जी ने उन्हें अंगवस्त्र प्रदान किया तथा स्वामी आर्यवेश जी ने स्मृति चिन्ह भेंटकर उनका अभिनन्दन किया।

समय–समय पर सभी गणमान्य अतिथियों का सम्मान शॉल उढ़ाकर, अंग वस्त्र प्रदान कर तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर किया गया। सम्मान करने वालों में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, पं. माया प्रकाश त्यागी जी आदि प्रमुख रहे।

अन्त में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने भजन गाया और राष्ट्रगान के उपरान्त गगनभेदी नारों के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ।

रात्रि 8 बजे से वैदिक संस्कृति सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने की और संयोजन कन्या गुरुकुल हसनपुर के आचार्य श्री अमन सिंह शास्त्री जी ने किया। सह–संयोजन श्री चन्द्रदेव शास्त्री, श्री शम्भूमित्र शास्त्री ने किया। मंच पर आसीन गणमान्य विशिष्ट अतिथियों में श्री श्रीराम आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल, श्री रामानन्द प्रसाद आर्य उपप्रधान बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. लक्ष्मणदास आर्य प्रधान मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा मुख्य थे। इस सम्मेलन में पूरे देश से आये गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों ने अपनी–अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करके श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर दिया। चाहे संस्कृत संभाषण हो, कंठस्थ वेद मंत्रों का पाठ हो, संस्कृत नाटिका हो या समूहगान हो सभी प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मनमोह लिया। गुरुकुलों में बालक की प्रतिभा को किस प्रकार निखारा जाता है, इसका जीता–जागता प्रमाण इन बच्चों ने यहाँ प्रस्तुत किया। गुरुकुलों के ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियाँ इतनी बड़ी संख्या में आये थे कि सबको अवसर देना असम्भव था। अतः अन्य सम्मेलनों के बीच–बीच में भी उन्हें अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर दिया गया। इस आयोजन के माध्यम से यह भी परिलक्षित हुआ कि गुरुकुलों के आचार्य कितने विद्वान तथा कार्यकुशल हैं जो अत्यधिक परिश्रम करके ब्रह्मचारियों को तैयार करते हैं तथा उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में पारंगत करते हैं। आयोजन के मध्य में समय–समय पर गणमान्य व्यक्तियों ने अपने प्रेरणादाई उद्बोधनों से ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों का उत्साह बढ़ाया एवं मार्गदर्शन किया।

सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि अपने परिवार और समाज को यदि सुखी, समृद्ध रखना है तो संस्कृत, संस्कृति, संस्कार, सुविचार और सद्व्यवहार को अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में राष्ट्रीय और सामाजिक उत्थान की कल्पना की थी। यह पद्धति समानता के सिद्धान्त पर टिकी है। गुरुकुल मात्र शिक्षा संस्थान नहीं होते, अपितु यह जीवन निर्माण की कार्यशाला है। उन्होंने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि पश्चिम की ओर सूर्य अस्त होता है। हमें पाश्चात्य की ओर जाकर अस्त नहीं होना है। पूर्व की ओर हम केवल गुरुकुल शिक्षा पद्धति के माध्यम से जा सकते हैं, जहाँ से प्रकाश का उदय होता है। स्वामी जी ने कहा कि ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों में से केवल ब्रह्मचर्य आश्रम में ही आहार, व्यवहार एवं बुद्धि का निर्माण सम्भव हो सकता है।

दिनांक 7 जुलाई, 2018 को प्रातः 11 बजे से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्मेलन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य बालकृष्ण जी ने किया। संयोजन गुरुकुल पौंधा देहरादून के युवा विद्वान डॉ. धनन्जय आर्य ने की। वैदिक मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। आचार्य बालकृष्ण जी का सम्मान स्वामी आर्यवेश जी ने अंगवस्त्र प्रदान कर किया। स्वामी प्रणवानन्द जी ने शॉल उढ़ाकर तथा प्रो. विट्ठलराव आर्य ने आचार्य जी को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर अपने सम्बोधन में हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौ. हरिसिंह सैनी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हरिद्वार की धरती पर 1902 में गुरुकुल की स्थापना की थी। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को बताया कि गुरुकुलीय शिक्षा का उद्देश्य स्व को समाज के लिए समर्पित करना तथा अन्त में आत्म तत्त्व को परम तत्त्व में विलीन करना है। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के अधूरे कार्य को अब स्वामी आर्यवेश जी ने पूर्ण करने का वीणा उठाया है। श्री सैनी ने कहा कि आज पूर्व से भी अधिक पाखण्ड तथा अन्धविश्वास फैला हुआ है। जगह–जगह अपने आपको भगवान घोषित करने वाले लोग जेलों में सड़ रहे हैं, लेकिन आम लोगों की समझ में नहीं आ रहा है। आज पढ़े–लिखे लोग पाखण्ड और अन्धविश्वास में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उद्बोधन देते हुए

फंसे हुए हैं। आर्य समाज को पूरे देश में जागरूकता फैलानी होगी तथा इन तथाकथित गुरुओं की पोल खोलनी होगी। उन्होंने कहा कि सारा देश आज आर्य समाज की ओर टकटकी लगाये हुए है।

अजमेर के पूर्व सांसद प्रो. रासा सिंह रावत ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि लार्ड मैकाले द्वारा आरोपित शिक्षा पद्धति ने देश का अत्यधिक पतन किया है। उसका उद्देश्य भारतीयों को अंग्रेजों के अधीन छोटे–छोटे पदों पर नियुक्त होने योग्य बनाना था तथा अपने मत का प्रचार करना था। मैकाले ने कहा था कि हमारी योजना के तहत भारतीय खुद से ही नफरत करने लगेंगे। शिक्षा, सभ्यता, आचार–विचार आदि के द्वारा हम भारतीयों का मानसिक परिवर्तन कर देंगे जिससे वे नाम मात्र के भारतीय रह जायेंगे और सभ्यता से वह ईसाई बन जायेंगे। उन्होंने कहा कि आज जो मैकाले ने सोचा था वही हो रहा है। आज का युवा राष्ट्रप्रेम, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव को भूल चुका है। वह पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भाग रहा है। ऐसे समय में एक मात्र विकल्प गुरुकुलीय शिक्षा ही है जो नौजवानों को पुनः सही रास्त पर ला सकती है। स्वामी दयानन्द जी ने शिक्षा के विषय में सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में विस्तार से लिखा है। वह छात्रों में नैतिक गुणों का विकास करना चाहते थे। स्वामी दयानन्द जी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा पद्धति में वेदों और सम्बन्धित संस्कृत साहित्य का स्थान सर्वोपरी है। उनके मत में जो वेद पढ़ते हैं वे न्यायोचित कार्य करते हैं, योग का पालन करते हैं और ईश्वर पर पूर्ण विश्वास करते हैं। इसी पद्धति को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने विस्तार दिया और आज इसी की आवश्यकता है।

श्री कैलाश कर्मठ के मनोहारी भजन के उपरान्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री जी का उद्बोधन हुआ। उन्होंने कहा कि वेद के अनुसार, जो शिक्षा केवल साक्षर मात्र बनाती है जिसमें केवल लौकिक और भौतिक ज्ञान का समावेश है वह शिक्षा अधूरी है। अर्थात् जिसमें केवल अभ्युदय का ज्ञान है और निःश्रेयस को भुला दिया गया है वह शिक्षा अधूरी एवं निष्प्रयोजन है। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली संस्कार पद्धति पर ही आधृत है। इस पद्धति में मानव को संस्कृत करना ही सर्वोच्च लक्ष्य होता है। ज्ञान के उपार्जन और बुद्धि के परिमार्जन में ही नहीं अपितु शिक्षार्थियों के नैतिक चरित्र और संस्कृत व्यक्तित्व के निर्माण में गुरुकुलीय शिक्षा विशेष ध्यान देती है। उन्होंने कहा कि आज फैलते अन्धविश्वास का जवाब आर्य पाठ विधि है। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है कि हमारे गुरुकुलों से शास्त्रार्थ महारथी निकलें तथा प्रत्येक गुरुकुल में शास्त्रार्थ की तैयारी का विभाग भी होना चाहिए। आचार्य जी ने कहा कि गुरुकुलों की पाठविधि, वेशभूषा तथा संगठन एक हो। उन्होंने आर्यों से अपील की कि आर्यजन गुरुकुलों के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करें।

डॉ. पवित्रा विद्यालंकार ने अपने उद्बोधन में कहा कि एजुकेशन को शिक्षा कहते हैं। एजुकेशन बाहर से ज्ञान को उड़ेलती है, जबकि शिक्षा ज्ञान को अन्दर से बाहर निकालने का कार्य करती है। गुरुकुल आधारित वैदिक शिक्षा प्रणाली केवल पुस्तकीय ज्ञान पर बल नहीं देती अपितु उसमें व्यवहारिक आदर्श और चरित्र निर्माण समान रूप से महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। मनोरम प्राकृतिक वातावरण में रहकर बलिष्ठ शरीर का निर्माण, समानता का जीवन जीकर, सामाजिक चेतना की प्राप्ति तथा गुरु के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर आत्मिक विकास या सर्वांगीण व्यक्तित्व का उत्कर्ष गुरुकुल की देन है। उन्होंने कहा कि माता बच्चे का पहला गुरु होती है, उसके बाद पिता और बाद में गुरु उसको पूर्ण मानव बनाने का कार्य करता है। उन्होंने कहा कि आज मैकाले द्वारा थोपी गई शिक्षा में चरित्र का कोई स्थान नहीं है। इसीलिए आज चोरी, बेईमानी, लूट, खसोट, पाखण्ड फैल रहा है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही है। इस पद्धति को अपनाकर ही देश सद्चरित्र बन सकता है।

शिवगंज से पधारी डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने अपने उद्बोधन में कहा कि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में जीवन, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के अभ्युत्थान के मार्गदर्शक तत्व विद्यमान हैं। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति वेदों के ऊपर निर्धारित है। इस पद्धति में मनुष्य जीवन को असत्य से सत्य की ओर, अज्ञानान्धकार से ज्ञानोदय की ओर तथा मृत्यु से अमृतत्त्व की ओर ले जाया जाता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यम–नियम, यज्ञादि व्रतों का आचरण तथा ज्ञान, कर्म और भक्ति मार्ग का अनुसरण का निर्देश होता है। व्यक्ति जब जीवन में उच्च लक्ष्यों को भुला देता है तभी कुपथगामी होकर अनैतिक आचरणों में लिप्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि इसी ज्ञान की परम्परा को आगे ले जाना है और यह परम्परा केवल गुरुकुलों के माध्यम से प्राप्त हो सकती है। उन्होंने कहा कि आज गुरुकुलों को सहयोग की आवश्यकता है। गुरुकुल वह सब करने के लिए तैयार हैं जिसकी उससे अपेक्षा की जाती है।

स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा ने अपने भावपूर्ण उद्बोधन में कहा कि समाज, देश तथा भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाना है तो गुरुकुलों को महत्ता प्रदान करनी होगी। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. लेखराम जी, पं. गुरुदत्त जी के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि त्याग तथा परिश्रम किसी भी संस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक होते हैं। उन्होंने कहा कि आज समाज में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की कमी होती जा रही है। कर्त्तव्य निष्ठा के स्थान पर अकर्मण्यता और उच्छृंखलता का बोलबाला है। इसी कारण समाज में सर्वत्र अशान्ति व आक्रोश का वातावरण है। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा के अनुसार यदि युवाओं को अपने महान वैदिक साहित्य व धर्म का ज्ञान कराया जाये, अपने गौरवपूर्ण इतिहास एवं महापुरुषों के जीवन चरित्र सुनाकर प्रेरणा दी जाये तो इस विषाक्त वातावरण को सुधारा जा सकता है और यह काम केवल गुरुकुल ही कर सकते हैं।

इस अवसर पर वयोवृद्ध वैदिक विद्वान डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि किसी भी देश का वर्तमान और भविष्य शिक्षा पर निर्भर करता है। आचार्य, आचार की शिक्षा देता है और वही देश को उठाता है। आज देश में देखने को मिल रहा है कि मनुष्य समुदाय दुर्बलता, रुग्णता, अशिक्षा, दरिद्रता आदि के कुचक्र में पिस रहा है। समस्याएँ, उलझने, विपत्तियाँ अपने–अपने ढंग से हर किसी को परेशान कर रही है। यह सब क्यों हो रहा है जबकि प्रगतियुग के नाम प्रसिद्ध विज्ञान ने अनेकानेक सुविधा, साधन उपलब्ध करा रखे हैं तो फिर ये अभावग्रस्तता कहाँ से उत्पन्न होती है। इसका एक ही कारण है कि नैतिक मूल्यों की अवज्ञा और उपेक्षा होने लगी है। जबकि भारतीय संस्कृति का आधार ही नैतिकता है और इस नैतिकता की जननी है वैदिक शिक्षा प्रणाली जो गुरुकुलों से प्राप्त होती है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता मानवीय भावना रही है। व्यक्ति को समाज के योग्य बनाना ही शिक्षा का केन्द्र माना गया है। मनुष्य मात्र के प्रति सौहार्द और सद्भाव सिखाना ही गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का प्रधान लक्ष्य रहा है। गुरुकुलीय शिक्षा की आज भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी प्राचीन काल में थी। गुरुकुलों की एकरूपता तथा गुरुकुलों का सशक्त संगठन बनाने की दिशा में कार्य होना चाहिए।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने घोषणा की कि विद्वानों तथा संन्यासियों ने विचार विमर्ष करके सर्वसम्मति से 'श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्' का गठन कर दिया है। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती इसके संरक्षक और प्रधान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती होंगे। कार्यकारिणी का गठन दोनों की सहमति से होगा। सारे गुरुकुल इस संगठन के माध्यम से चलेंगे। गुरुकुलों की उन्नति पाठ्यक्रम पर विचार तथा सहयोग आदि का कार्य इस परिषद् द्वारा किया जायेगा। इसकी पहली बैठक 30 सितम्बर, 2018 को हैदराबाद में होगी।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपनी विशेष शैली में विद्वतापूर्ण उद्बोधन दिया। उन्होंने श्रोताओं के अपार समूह को देखकर स्वामी आर्यवेश जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि स्वामी जी ने आज गंगा का रूख हिमालय की ओर चढ़ा दिया है। उन्होंने कहा कि यह अपार जनसमूह दर्शा रहा है कि आर्य समाज सही दिशा की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन पहली बार हो रहा है और यह बहुत ही अच्छा प्रयास है। उन्होंने कहा कि यदि गुरुकुलों को सही मार्गदर्शन, सहयोग और संगठन प्राप्त हो गया तो देश फिर से विश्वगुरु बनने की ओर बढ़ चलेगा। उन्होंने कहा कि आधुनिक शिक्षा पद्धति ने समाज को वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर तो दिये पर मानव नहीं दे पाई। यही कारण है कि आज का मनुष्य खण्ड–खण्ड में जी रहा है। शिक्षा का तात्पर्य मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता का प्रकाशन है। इसलिए यदि समस्याओं से निदान पाना है तो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को अपनाना पड़ेगा तथा उसमें कुछ नवीनता का भी समावेश करना होगा तभी सर्वांगीण रूप से विकसित आध्यात्मिक आदर्शों से अनुप्राणित मनुष्यों के निर्माण की प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ हो सकेगी।

दक्षिण अफ्रीका से पधारे श्री बिसराम रामबिलास जी ने आर्यों के द्वारा डर्बन में किये जा रहे कार्यों का विवरण दिया और कहा कि आज का यह विशाल सम्मेलन बहुत प्रेरणादायक है और इस प्रकार के सम्मेलन गुरुकुल शिक्षा पद्धति को उत्कर्ष तक ले जाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे आचार्य बालकृष्ण जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिए इस प्रकार के सम्मेलन मील के पत्थर साबित होंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान में राष्ट्रवाद, अध्यात्मवाद तथा स्वदेशी की बातें हो रही हैं। यह सब गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा देने से ही सम्भव हो सकती है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति को लेकर किया गया यह सम्मेलन एक अद्भुत प्रयोग है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने एक स्वप्न देखा था और उसे मूर्त रूप दिया स्वामी श्रद्धानन्द जी ने। उन्होंने कहा कि आज मैं जो कुछ भी हूँ वह आर्य समाज और गुरुकुल की बदौलत हूँ। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में जीवन देने वाले और अपना सर्वस्व अर्पित करके हमारा पालन पोषण करने वाले माता–पिता को तथा अज्ञान से प्रकाश की ओर ले जाने वाले तथा सर्वांगीण विकास करने वाले गुरुजनों को देवों के समतुल्य मानती है। ऐसी है गुरुकुलीय शिक्षा। उन्होंने कहा कि संगठन में बहुत शक्ति होती है और आर्यों को संगठित होकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहिए। उन्होंने घोषणा की कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने में हमारा हर प्रकार से सहयोग रहेगा।

आचार्य बालकृष्ण जी के उद्बोधन के साथ ही दूसरा सम्मेलन 'वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विकल्प सम्मेलन' प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह जी ने की तथा संयोजन युवा आर्य नेता एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय इस्पात मंत्री चौ. बीरेन्द्र सिंह जी बिराजमान थे।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी अपने विचार रखते हुए

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. जयदेव विद्यालंकार ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली द्वारा ही आमूल–चूल परिवर्तन किया जा सकता है। इस शिक्षा प्रणाली में न केवल सामान्य शिक्षा अपितु सैद्धान्तिक ज्ञान के अतिरिक्त छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान तथा धार्मिक प्रशिक्षण देना एक अभिन्न अंग होता है। गुरुकुलीय शिक्षा एक स्पष्ट जनतांत्रिक भावना से ओत–प्रोत होती है। राष्ट्रीय जागृति और उसके माध्यम से राष्ट्रवाद की शिक्षा देना, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की बड़ी देन है।

अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. शिव कुमार शास्त्री ने कहा कि गुरुकुल की शिक्षा का कोई विकल्प है ही नहीं। गुरुकुल का ब्रह्मचारी जिस क्षेत्र में भी जाता है विजय पताका फहराता है। वह आत्म विश्वास से भरा होता है। इसलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सबसे बढ़िया विकल्प गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही है। इसे आगे बढ़ाने के लिए हम सब कृत–संकल्पित हैं।

डॉ. सीमा आहूजा ने अपने वक्तव्य में कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा में कुछ आवश्यक विषयों को शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्राचीन शिक्षा का आधार अध्यात्म था और इसी के द्वारा ब्रह्मचारी को आत्मबोध कराया जाता था। इसके अतिरिक्त वह गुरु के आचरण से ज्यादा सीखता था। उन्होंने कहा कि महानगरों में गुरुकुलीय शिक्षा को कैसे आगे बढ़ाया जाये यह चिन्तनीय है।

इस अवसर पर स्वामी रामवेश जी ने कहा कि 10 विद्वानों की कमेटी बनाकर पाठ्यक्रम तय किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों के माध्यम से विद्वानों को तैयार किया जाना चाहिए। यदि भारतीय संस्कृति को बचाना है तो गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना होगा।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि गुरुकुल आन्दोलन की उत्पत्ति का श्रेय महर्षि दयानन्द की कल्पना को है जिसे मूर्त रूप दिया स्वामी श्रद्धानन्द जी ने। उनकी यह भावना थी कि प्रत्येक ब्रह्मचारी को देश के सांस्कृतिक अतीत, उपलब्धियों एवं परम्पराओं का ज्ञान कराया जाये तथा शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रवाद का पाठ भी सम्मिलित होता था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से न केवल नये समाज बल्कि नये युग की नींव रखी गई थी। अपितु इसके माध्यम से राष्ट्रवाद का भी आह्वान हो रहा था। आज पुनः उसी प्रकार के शिक्षा की आवश्यकता है। गुरुकुल महासम्मेलन आयोजित कर इस दिशा में कदम बढ़ाकर वास्तव में एक श्रेयष्कर कार्य किया गया है।

श्री ध्रुव मित्तल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज सारे गुरुकुलों को एक स्थान पर एकत्रित करके स्वामी आर्यवेश जी ने महान कार्य किया है। उन्होंने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के द्वारा ही समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है, क्योंकि चारित्रिक उत्थान के लिए गुरुकुलों के अलावा और कोई सक्षम नहीं हो सकता। नैतिक श्रेष्ठता के बिना सभ्य संस्कारित समाज का निर्माण नहीं हो सकता। विश्व की समस्याओं का मूल दिन–प्रतिदिन नैतिक मूल्यों का पतन होना ही है।

पूर्व आई.पी.एस. डॉ. आनन्द कुमार जी ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि शारीरिक, आत्मिक और वौद्धिक उन्नति के लिए गुरुकुलीय शिक्षा सबसे अनुकूल है। लेकिन आज हमें जो शिक्षा दी जा रही है वह मानसिक बीमारी पैदा कर रही है। उन्होंने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति की रक्षा करने में पूर्ण है।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री चौ. बीरेन्द्र सिंह जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस गुरुकुल शिक्षा पद्धति की आधारशिला रखी थी वह आम आदमी का स्कूल था। जहाँ ऊँच–नीच, गरीबी–अमीरी, जाति–पांति का कोई बन्धन नहीं था। जहाँ सबको समान शिक्षा प्रदान की जाती थी, समान वस्त्र, समान भोजन तथा समान आसन उपलब्ध कराया जाता था। उन्होंने कहा कि आज शिक्षा के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति का घिनौना रूप युवा पीढ़ी के सामने आ रहा है और वैदिक संस्कृति को ललकार रहा है। मंत्री जी ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा से आगे बढ़कर संस्कारों को भी महत्त्व दिया जाता है। उन्होंने कहा कि एक पाठविधि सभी गुरुकुलों में लागू की जानी चाहिए। मैं आर्य समाजी विचारधारा से पला–बढ़ा हूँ। ईमानदारी, सच्चाई, स्वच्छता राजनीति में किसी तपस्या से कम नहीं है। उन्होंने दीनबन्धु सर छोटूराम जी के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि मेरे अन्दर भी उन्हीं का रक्त प्रवाहित है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने सबसे बड़ा प्रहार हमारी शिक्षा व्यवस्था पर ही किया था और उसका प्रतिकार स्वामी दयानन्द जी और उनके परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुलों के माध्यम से किया। उन्होंने घोषणा की राजनीति के बाद यदि मैं कोई काम करूँगा तो आर्य समाज का कार्य करूँगा।

सम्मेलन के बीच–बीच में सभी गणमान्य अतिथियों का सम्मान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, आचार्य प्रेमपाल आदि ने स्मृति चिन्ह भेंट कर, अंग वस्त्र प्रदान कर तथा शॉल उढ़ाकर किया।

विशाल शोभायात्रा का आयोजन सम्मेलन के दूसरे दिन मध्यान्ह में किया गया। इस शोभा यात्रा का नेतृत्व करते हुए स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती जी, स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी आदि सबसे आगे चल रहे थे। लगभग 2 किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा में अपने–अपने समाज, गुरुकुल, संस्था के बैनर लिये हजारों प्रतिभागियों ने पूरे हरिद्वार नगर को जयघोषों, भजनों तथा आर्यवीरों के विभिन्न आकर्षक मनमोहक आसनों, करतबों से रोमांचित कर दिया। शोभा यात्रा में भाग ले रहे हजारों गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियाँ स्ववेशों में अलग आकर्षण का केन्द्र रही। देशभक्ति, आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के नारों से सारे हरिद्वार नगर को गुंजायमान करती हुई बैंड–बाजों तथा विशेष वाहनों से सुसज्जित इस यात्रा का हरिद्वार नगर में स्थान–स्थान पर फूलों की वर्षा तथा जलपान आदि से स्वागत किया गया। यह यात्रा सिंहद्वार, शंकर आश्रम, रानीपुर मोड़, छोटी नहर, दादूबाग पुलिया, कृष्णानगर होते हुए गुरुकुल कांगड़ी में सम्पन्न हुई।

रात्रि में 'भवत्येकनीडम् सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने की तथा संयोजन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री अनिल आर्य ने किया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री रविदेव गुप्ता ने कहा कि आज के सम्मेलन का बहुत सुन्दर विषय रखा गया है। 'भवत्येकनीडम्' नीड का मतलब घोसला होता है तथा आश्रय के लिए नीड बनाना ही होता है। उन्होंने कहा कि चाहे कितनी भी ऊँची उड़ान हो वापस आना पृथ्वी पर ही होता है। क्योंकि जो सुख और आनन्द अपने घोसले में प्राप्त होता है वह कहीं नहीं है। उन्होंने कहा कि नाना प्रकार की योनियों के अन्दर कर्मफल के अनुसार शरीर धारण कराता है परमात्मा। सारी सृष्टि में जितनी भी योनियाँ हैं वह सब एक पिता की सन्तान हैं। उसने प्रत्येक का स्वभाव निश्चित कर दिया है। चाहे वह चेतन हो या वनस्पति जगत। उन्होंने कहा कि मानव मात्र का संविधान एक है, वह है वेद। उनका धर्म भी एक है, वह है वैदिक धर्म और धर्म के 10 लक्षण भी बताये गये हैं। इन धर्म के 10 लक्षणों को अपनाने से सारे विश्व में शान्ति, सौहार्द का वातावरण बन सकता है। परमात्मा ने सारे विश्व को एक नीड के रूप में बनाया है। जहाँ रहने पर शांति का अनुभव होता है। मनुष्य के अन्दर नैतिकता और जीवन मूल्यों का समावेश होने पर सारा विश्व एक नीड बन सकता है और भारतीय संस्कृति इसी में विश्वास रखती है।

इस अवसर पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि सारे विश्व को यदि घोसले की तरह बनाना चाहते हैं तो एक मात्र विकल्प गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को अपनाना है। उन्होंने कहा कि जीवन में सुख चाहते हो, आनन्द चाहते हो, पूरी दुनिया को एक परिवार की तरह देखना चाहते हो तो इन्सान बनो 'मनुर्भव'। जब सब एक हैं तो विद्वेष की कोई सम्भावना ही नहीं रहेगी। क्योंकि विद्वेष वहाँ पैदा होता है जहाँ परायापन होता है। अतः तप, त्याग, निःस्वार्थभाव और सभी को एक परिवार की तरह प्यार करना सीख लो तो सारा संसार सुखमय हो जायेगा।

स्वामी सच्चिदानन्द जी ने अपने प्रेरणादाई उद्बोधन में कहा कि विश्व की सारी समस्याओं का निदान वेद में है। वेद को घर–घर में पहुँचाना चाहिए। जब वेद के अनुसार सब चलने लगेंगे तो शांति स्वतः पैदा हो जायेगी।

इस अवसर पर प्रसिद्ध कवि सारस्वत मोहन मनीषी ने एक मनमोहक कविता सुनाकर सबको प्रेरणा प्रदान की। उनकी कविता के बोल थे –

'हंसना भी जरूरी है, रोना भी जरूरी है। जगना भी जरूरी है, सोना भी जरूरी है। पाना भी जरूरी है, खोना भी जरूरी है। अब खेतों में बंदूकें बोना भी जरूरी है।'

इस अवसर पर श्री यशवीर आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह गुरुकुल महासम्मेलन महान उद्देश्यों को साकार करने के लिए आयोजित किया गया है और इस अपार जन–समूह को देखकर यह आभास होता है कि यह सम्मेलन कितना महत्त्वपूर्ण सम्मेलन है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम की तरह ही आर्य समाज को एक बार फिर आन्दोलन खड़ा करना पड़ेगा। तभी यह देश रास्ते पर आ पायेगा। आज गलत शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो रहा है जिसे रोकने के लिए गुरुकुलीय शिक्षा ही एक मात्र विकल्प है।

इस अवसर पर बोलते हुए राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह जी ने कहा कि आज देश में स्थिति बड़ी गम्भीर है। देश गढ्ढे में जा रहा है और किसी को कोई चिन्ता नहीं है। मैकाले द्वारा प्रदत्त शिक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के चित्रमय संस्मरण

विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी ओजस्वी उद्बोधन देते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के चित्रमय संस्मरण

मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी अपने विचार रखते हुए

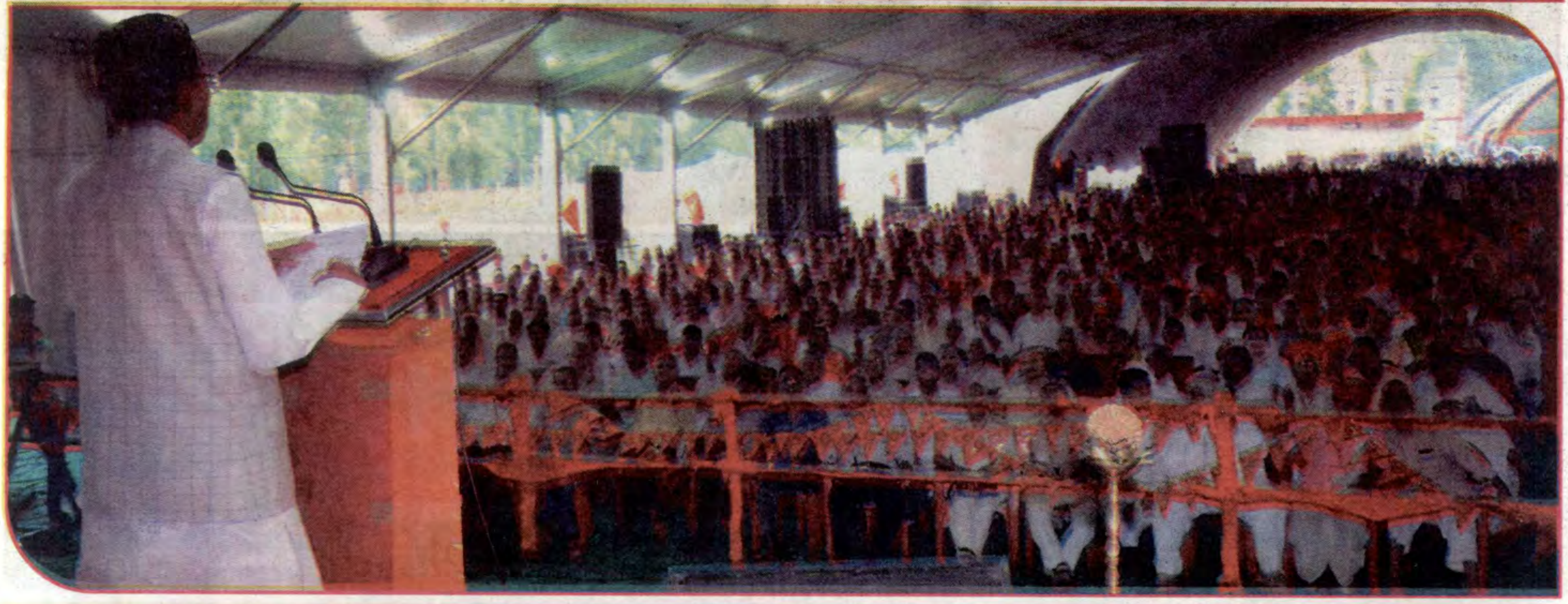

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के चित्रमय संस्मरण

महासम्मेलन में उद्‌बोधन देते हुए आचार्य बालकृष्ण जी

केन्द्रीय इस्पात मंत्री चौ. बीरेन्द्र सिंह जी उद्‌बोधन देते हुए

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान डॉ. बिसराम रामबिलास जी विचार व्यक्त करते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के चित्रमय संस्मरण

बिहार के राज्यपाल श्री सत्यपाल मलिक जी समापन सत्र में बोलते हुए

वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी समापन सत्र में बोलते हुए

उत्तराखण्ड विधानसभा अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द अग्रवाल बोलते हुए

उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी उद्बोधन देते हुए

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी अपने विचार रखते हुए

डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी अपने विचार रखते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के चित्रमय संस्मरण

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी अपने विचार व्यक्त करते हुए

वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी उद्बोधन देते हुए

वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री जी उद्बोधन देते हुए

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. वीक्षेन्द्र जी उद्बोधन देते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के चित्रमय संस्मरण

आर्य समाज के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी उद्बोधन देते हुए

दिल्ली के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी उद्बोधन देते हुए

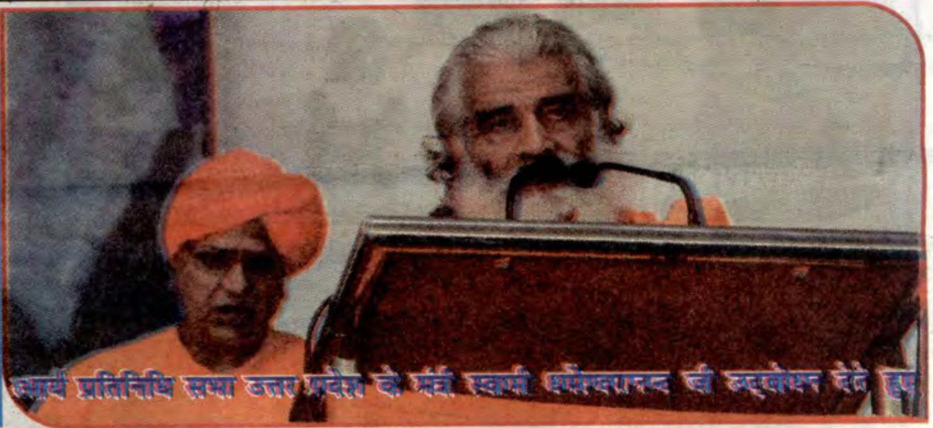
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी उद्बोधन देते हुए

आर्य समाज के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी धर्मानन्द जी उद्बोधन देते हुए

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विचार व्यक्त करते हुए

आचार्या सुकामा जी

स्थानीय विधायक श्री आदेश चौहान जी महासम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए

आचार्या सूर्यादेवी जी

आचार्या नन्दिता जी

आचार्या धारणा जी

आचार्या प्रियंवदा वेदभारती जी

श्रीमती गायत्री मीणा जी

आचार्या पवित्रा विद्यालंकार जी

आचार्या शारदा जी

आचार्या गायत्री जी

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में सम्मान के कुछ चित्र

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में निकाली गई शोभा यात्रा की चित्रमय झलकियाँ

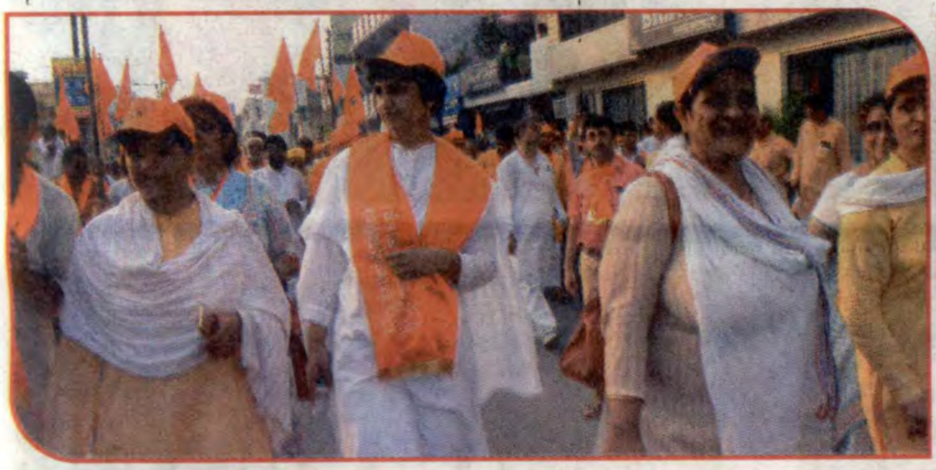

व्यवस्था ने देश में नैतिकता की धज्जियाँ उड़ा दी हैं। आज सारा देश पाश्चात्य चकाचौंध में अपनी अस्मिता को खोता जा रहा है। गुरुकुल महासम्मेलन के द्वारा आशा की एक किरण दिखाई दी है क्योंकि एकमात्र विकल्प आर्य शिक्षा प्रणाली ही है जहाँ बालकों का निर्माण होता है। उन्हें नैतिक ज्ञान प्राप्त कराया जाता है और राष्ट्र से प्रेम करना सिखाया जाता है तथा इन्हीं गुणों के द्वारा देश में स्वाभिमान का उदय होता है। उन्होंने अपने द्वारा किये गये कार्यों को सबके सामने रखा और कहा कि मैं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिए हर सम्भव प्रयास करूँगा।

श्री रामफल आर्य ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के दिमाग की उपज थी और उसे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मूर्त रूप प्रदान किया। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब अपने बच्चों को पढ़ने के लिए गुरुकुल में भेजें और गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को सारे विश्व में लागू करने के लिए प्रयास करें।

दक्षिण अफ्रीका से पधारे श्री बिश्राम रामबिलास जी ने कहा कि यह सम्मेलन बहुत बड़ी उपलब्धि है। मेरे पास शब्द नहीं हैं जिससे मैं इस कार्य की प्रशंसा कर सकूँ। उन्होंने कहा कि यह विचारधारा आम आदमी तक पहुँचाई जानी चाहिए, क्योंकि इसी विचारधारा से मनुर्भव की अवधारणा सिद्ध हो सकती है।

इस अवसर पर सम्मेलन का संयोजन कर रहे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि युवाओं को चरित्रवान बनाना तथा देशभक्ति की प्रेरणा देना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। गुरुकुलीय शिक्षा द्वारा हम अपने बच्चों को संस्कारित करके देश पर बलिदान होने के लिए तैयार कर सकते हैं। आज का यह विशाल सम्मेलन गुरुकुलीय शिक्षा को एक नवीनता प्रदान करते हुए सारे देश में लागू हो ऐसी कामना है।

देर रात तक चले इस सम्मेलन में अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। सभी गणमान्य महानुभावों का अभिनन्दन तथा सम्मान स्मृति चिन्ह भेंटकर शॉल उढ़ाकर तथा अंगवस्त्र प्रदान कर किया गया।

अन्तिम दिवस प्रातः 11 बजे से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्मेलन 'वेद एवं

संस्कृति सम्मेलन' का भव्य आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति श्री महावीर अग्रवाल जी ने की तथा संयोजन युवा वैदिक विद्वान डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने किया। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी रहे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तराखण्ड विधानसभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल पधारे।

स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी का आज जन्मदिवस है। उनके पुत्रों ने कहा कि आपका जन्मदिवस हम सब घर पर ही हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहते हैं, लेकिन पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने कहा कि यह जन्मदिवस हम गुरुकुल महासम्मेलन में ही मना लिया। इस समाचार को सुनकर सभी गणमान्य अतिथियों ने श्री त्यागी जी को उत्तम स्वास्थ्य, यशस्वी जीवन तथा दीर्घायुष्य की कामना करते हुए उनको शुभकामनाएँ प्रदान की। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी आदि ने उन्हें अंगवस्त्र, शॉल तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री आर. एस. तोमर ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह गुरुकुल सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अत्यन्त सफलता के साथ आयोजित किया गया है। मैं आयोजकों और स्वामी आर्यवेश जी को बधाई देता हूँ कि उन्होंने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय चुना। उन्होंने कहा कि आज युवाओं में जो सबसे अधिक कमी खल रही है वह है चरित्र की। वर्तमान शिक्षा पद्धति में चरित्र की शिक्षा का कोई स्थान नहीं है और इसीलिए देश में विभिन्न समस्याएँ पैदा हो रही हैं। उन्होंने कहा कि आज संस्कृत को जन–जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है और गुरुकुल इसका सबसे अच्छा माध्यम हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमारा समस्त ज्ञान संस्कृत में है जिसे कोई पढ़ना ही नहीं चाहता। वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि कम्प्यूटर के लिए यदि कोई सबसे अच्छी भाषा है तो वह संस्कृत है। उन्होंने कहा कि आज बदलते समय में हमें अपने गुरुकुलों के पाठ्यक्रम में नवीनता लानी होगी। उनको ऐसा आकर्षक बनाना होगा कि लोग स्वयं गुरुकुल की तरफ आकर्षित हों।

इस अवसर पर आर्य कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियम्वदा जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह सम्मेलन गुरुकुलों को दिशा प्रदान करने के लिए एक बहुत बड़ी क्रांति है। उन्होंने कहा कि संस्कृत की रक्षा से ही भारत की रक्षा सम्भव है। क्योंकि भाषा पर ही भारत की संस्कृति टिकी है। भारत कितना ही उन्नत क्यों न हो जाये परन्तु यदि संस्कृत लुप्त हो गई तो यहाँ संस्कृति, आध्यात्मिकता, सद्‌विचार और सद्‌व्यवहार की रक्षा भी कठिन हो जायेगी। उन्होंने कहा कि संस्कृत पढ़ने वाला व्यक्ति ईश्वर, जीव और प्रकृति के रिश्ते को बड़ी सरलता और गम्भीरता के साथ समझ लेता है।

इस अवसर पर डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार ने कहा कि ऐसी दुनिया में कोई विद्या नहीं जो वेद से बाहर हो। वेद हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बात पर मार्ग दर्शन देते हैं। पिण्ड से ब्रह्माण्ड का समन्वय धर्म, काम, मोक्ष के साथ–साथ ज्ञान, कर्म और उपासना पर भी मार्गदर्शन प्राप्त होता है वेद से। वेद की रक्षा हम सबको करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और इसी से मानव को परिपक्वता मिली और उसी से मानव का विकास हुआ। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति को वेद का स्वाध्याय नियमित रूप से करना चाहिए।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने विशेष अंदाज में कहा केवल वेद ही सुसंस्कृति और विकास प्रदान कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह है कि जो वेद के विद्वान् हैं वे विज्ञान से परिचित नहीं हैं। और जो वैज्ञानिक हैं वे वेद से परिचित नहीं हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि गुरुकुलों में विज्ञान को पढ़ाने की व्यवस्था की जाये और वैज्ञानिकों को वैदिक ज्ञान से अवगत कराने के लिए उन्हें वेद भेंट किये जायें। परमात्मा की इस अमर कल्याणी वाणी वेद में प्राणी मात्र के कल्याण और विश्वशांति परक मंत्रों की भरमार है। परन्तु आज की स्थिति क्या है कि पूरे विश्व में शांति के बजाय आतंकवाद का साम्राज्य है। अतः वेद की शिक्षाओं का प्रचार पूरे विश्व में होना चाहिए। उन्होंने वेद और शब्द की विद्वतापूर्ण व्याख्या करके श्रोताओं को लाभान्वित किया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. रूपकिशोर शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमर प्रयासों के परिणामस्वरूप जो वेद के विद्वान इस पुण्य धरती से निकले उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में अपना परचम लहराया। उन्होंने कहा कि वैदिक साहित्य में परा और अपरा विद्या को प्रदान कर सबको चमत्कृत किया। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान का मूल वेद है। आज संस्कृत जानने वालों की स्थिति जनगणना के आंकड़ों के हिसाब से मात्र पूरे देश में 14,145 है जो अत्यन्त चिन्ता का विषय है। उन्होंने अपील की कि 2021 की जनगणना में आप सबलोग अपनी भाषा संस्कृत लिखवायें। संस्कृत को जीवित रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में दयानन्द चेयर की स्थापना होनी चाहिए।

डॉ. जयदत्त उप्रेती ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वेद ज्ञान के भण्डार हैं उसे समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज चरित्र निर्माण का कारखाना है। इतनी बड़ी संख्या में आपका पधारना गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली और वैदिक विचारधारा को बल प्रदान करेगा।

इस अवसर पर नोएडा से पधारीं डॉ. गायत्री मीणा ने कहा कि वेद में परिवार, समाज, राष्ट्र की उन्नति की बात कही गई है। महर्षि दयानन्द ने नारा दिया था कि वेदों की ओर लौटो, हम सबको वेद की शिक्षाओं के अनुसार जीवन जीना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी निष्ठा वेद और गुरुकुलों में सदैव बनी रहे और इस विरासत को हम संभाल कर रखें।

सम्मेलन के अध्यक्ष पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति श्री महावीर जी अग्रवाल ने विशाल जनसमूह को उद्‌बोधन देते हुए सर्वप्रथम स्वामी आर्यवेश जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि सोते–जागते, उठते–बैठते, खाते–पीते आर्य समाज, वेद और संस्कृति की ही बात सोचने वाले स्वामी आर्यवेश जी ने गंगा के तट पर हिमालय के चरणों में यह विशाल महत्त्वपूर्ण आयोजन करके अत्यन्त अभिनन्दनीय और प्रशंसनीय कार्य किया है। उन्होंने देश के अतीत को जगाने का सपना देखा है और इनके इस स्वप्न को पूरा करने के लिए आप सब भी संकल्पित हैं यह आपका विशाल समागम बताने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने कहा कि आप सबको यहाँ से संकल्प लेकर जाना है कि वेद का संदेश जन–जन तक पहुँचाने के लिए तन–मन–धन से सदैव प्रयासरत रहेंगे। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक बिन्दु पर संयम, अनुशासन तथा आदर्श का मार्ग प्रस्तुत करती है। विशाल हृदयता, उदारता व सहकारिता का भाव भारतीय संस्कारों से अनुप्राणित होने के कारण स्वतः ही विकसित हो जाता है। प्राचीनकाल में 'मैं' के स्थान पर 'हम' के रूप में समाज का विकास हुआ। और हमने वैभव के चरम पर पहुँचने में सफलता प्राप्त की। भारतीय संस्कृति से दूर हट जाने के कारण 'हम' के स्थान पर 'मैं' को प्रधानता दी गई। जिस कारण व्यक्ति आत्म केन्द्रित हो गया और समाज पतन की ओर उन्मुख होने लगा तथा यह प्रक्रिया सतत चलती चली आ रही है, इसको दूर करना होगा। उन्होंने कहा कि वेदों की महिमा अचिन्त्य है। विश्व को वेदों का योगदान अनिवर्चनीय है और वेद सर्वसिद्धि के दाता हैं। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों के माध्यम से वेदों का प्रचार–प्रसार अत्यन्त आसानी से किया जा सकता है। गुरुकुलों को समृद्ध करना आज सबसे बड़ी आवश्यकता है।

उत्तराखण्ड विधानसभा के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द्र अग्रवाल जी ने अपने प्रेरणादाई उद्‌बोधन में कहा कि पतित पावनी गंगा के तट पर गुरुकुलीय परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए यह महत्त्वपूर्ण आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि संस्कृत देवों की वाणी है और संस्कृत का उत्थान करने की लालसा मेरे मन में भी थी। संस्कृत को राजभाषा बनाने के लिए हमने बहुत बड़ा संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में संस्कृत में शपथ लेने वाला मैं पहला विधायक हूँ। उन्होंने कहा कि हमने सभी महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के नामपट्ट हिन्दी और संस्कृत दोनों भाषाओं में लिखाने का बड़ा कार्य किया है तथा संस्कृत उन्नयन समिति का भी गठन किया है। उन्होंने कहा कि हमारा सम्पूर्ण वांगमय संस्कृत में ही है। देद भी संस्कृत में ही है। वेद प्रभु की वाणी है। वेदों को परमेश्वर का अमर काव्य कहा गया है। देवस्य पश्य काव्यं न ममार, न जीर्यति। वेद सम्पूर्ण ज्ञान राशि के अक्षय निधि रूप हैं। उन्होंने कहा कि वेदों में मानव कल्याण के सरल, सुगम उपायों का निर्देश हुआ है। वैदिक नीति, बचनों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि यदि इनमें से दस–बीस विषयों को भी जीवन में ढाल लिया जाये तो मनुष्य का जीवन सुखमय हो सकता है।

इस सम्मेलन में पधारे सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठल राव आर्य जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी आदि ने अंगवस्त्र प्रदान कर स्मृति चिन्ह भेंटकर किया।

मध्यान्ह 1 से 2 बजे तक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली तथा स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक द्वारा लगभग 40 विशिष्ट विद्वानों, संन्यासियों, आचार्यों तथा भजनोपदेशकों का स्मृति चिन्ह भेंटकर, अंगवस्त्र प्रदान कर तथा सम्मान राशि भेंटकर सम्मान किया गया। सम्मान करने वाले गणमान्य महानुभावों में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री रामपाल शास्त्री जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी प्रमुख थे।

मध्यान्ह 2 बजे से समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की। तथा संयोजन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्‌ठलराव आर्य जी ने किया। इस अवसर पर बिहार के राज्यपाल महामहिम श्री सत्यपाल मलिक मुख्य अतिथि के रूप में बिराजमान हुए। उनके आगमन के पश्चात् राष्ट्रगान का गायन हुआ। तत्पश्चात् राज्यपाल महोदय का स्वागत तथा सम्मान स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, गुरुकुल के मुख्याधिष्ठा डॉ. दीनानाथ शर्मा जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी आदि ने शॉल उढ़ाकर, अंगवस्त्र प्रदान कर तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर किया।

इस अवसर पर सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने

अपने उद्‌बोधन में कहा कि देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, जातिवाद, छुआछूत, कन्या भ्रूण हत्या आदि बुराईयों को दूर करने के लिए वैदिक गुरुकुलों को शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए हम सब कृत–संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए त्याग पुरुषार्थ, तपस्या इत्यादि उदात्त विचारधारा को जीवन में धारण करना बड़ा आवश्यक होता है। अपनी आत्मा को ईंधन बनाकर राष्ट्र और समाज के लिए समर्पित करना ही जीवन की श्रेष्ठता है। उन्होंने कहा कि जहाँ अन्धकार है वहीं प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है और जहाँ अज्ञान है वहीं ज्ञान, शिक्षा, संस्कार और विद्या की आवश्यकता पड़ती है। हमारे देश के विद्वान्, आचार्य, ऋषि–मुनि ज्ञान की पिपासा बुझाते रहे हैं। वैदिक संस्कृति के हिलोरों से उत्साहित गुरुकुलों ने भारतीय जनमानस के विकास के लिए हजारों स्नातक दिये जिन्होंने भारत की राजनीति, सामाजिक सुधार तथा शिक्षा नीति पर अविस्मरणीय कार्य किये हैं। आज फिर से गुरुकुलों के उसी स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठापित करने के लिए यह सम्मेलन सफलता पूर्वक आयोजित किया गया। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा गुरुकुलों की भरपूर सहायता की जानी चाहिए। जिससे गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले योग्य विद्वान् तथा समाज को उन्नति की दिशा में ले जाने वाले परिपूर्ण युवक निकल सकें और पुनः भारत अपने प्राचीन स्वरूप को स्थापित करने में सफल हो सके। उन्होंने इस ऐतिहासिक सम्मेलन को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रसिद्ध पत्रकार तथा चिन्तक डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज यहाँ का दृश्य देखकर मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि 60 वर्ष पहले हिन्दी आन्दोलन में स्वामी ध्रुवानन्द जी ने जो कार्य किया वह आज स्वामी आर्यवेश जी ने पुनः करके दिखाया है। उन्होंने आर्य समाज में प्राण डाल दिये। उन्होंने कहा कि गुरुकुल प्रणाली हमारी शिक्षा की नींव है। लेकिन हमने इस पर अब तक भवन बनाकर खड़ा नहीं किया है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के शिक्षा के सिद्धान्त कार्ल मार्क्स से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ है। इसमें समतामूलक समाज व एक समान शिक्षा की वकालत की गई है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने शिक्षा में क्रांति कर दिखाई और वह विश्व का सबसे ताकतवर देश बन गया। भारत भी वैदिक शिक्षा को अपनाकर विश्व में सबसे शक्तिशाली देश बन सकता है। उन्होंने कहा कि प्राचीन शिक्षा के साथ–साथ आधुनिक तकनीकी विज्ञान से भी हमारे ब्रह्मचारी अछूते न रहें, इसका भी ध्यान रखना होगा। दुनिया पर हमारा प्रभाव तभी पड़ेगा जब आधुनिक विज्ञान का सही इस्तेमाल करते हुए अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को प्रस्तुत करे। हमें आधुनिकता और प्राचीनता का समन्वय करके चलना होगा। उन्होंने कहा कि हमारी विचार शक्ति और योजनाएँ और अधिक तेज और सक्रिय रहनी चाहिए तभी हम अपने आपको स्थापित कर पायेंगे। उन्होंने कहा कि पिछले 2 हजार सालों में महर्षि दयानन्द जी जैसा कोई विद्वान नहीं हुआ। भारत में ही नहीं पूरे विश्व में कोई नहीं हुआ। महर्षि ने शिक्षा व्यवस्था की जो नीति अपनाई वह अद्‌भुत है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज विचारों का गढ़ है। उसने जो विचार दिये वह कोई अन्य संस्था दे ही नहीं सकती। गुरुकुलों को जिन्दा रखने के लिए संस्कृत

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

धन्यवाद ज्ञापन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिनांक 6 से 8 जुलाई, 2018 तक स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्मस्थली गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड में 'अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन' ऐतिहासिक सफलता को प्राप्त हुआ। हम सभी प्रतिष्ठित संन्यासियों, समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों, गणमान्य महानुभावों, गुरुकुल के सम्मानित आचार्य एवं आचार्याओं तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करते हैं जिनके सकारात्मक सहयोग से यह महासम्मेलन ऐतिहासिक रूप से सफलता को प्राप्त हो सका।

इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए जहाँ देश–विदेश से हजारों की संख्या में जन–सैलाब उपस्थित हुआ वहीं आपके नेतृत्व में आर्यजनों के विशेष समूह ने सम्मेलन में उपस्थित होकर सम्मेलन की सफलता में चार–चांद लगा दिये। आपका सहयोग निःसंदेह प्रशंसनीय रहा।

आपने सम्मेलन में अपना अमूल्य समय देकर हमें कृतार्थ किया, इसके लिए हम आपके कृतज्ञ रहेंगे। आपके हरिद्वार प्रवास के समय यदि आतिथ्य एवं मान–सम्मान में कोई कमी रह गई हो या आपको किसी भी प्रकार की असुविधा हुई हो तो हम सभा की ओर से क्षमा प्रार्थी हैं। हम अनुभव कर रहे हैं कि इतने बड़े कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में न्यूनता अवश्य ही रह जाती है। गुरुकुल महासम्मेलन में भी कई न्यूनतायें रह गई होंगी। आशा है आप उदारता का परिचय देते हुए इन न्यूनताओं की उपेक्षा करते हुए हमारे प्रति अपनी आत्मीयता बनाये रखेंगे। हमे विश्वास है कि भविष्य में भी आर्य समाज के कार्यों में आपका सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

स्वामी आर्यवेश	पं. मायाप्रकाश त्यागी	प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा प्रधान	कोषाध्यक्ष	सभा मंत्री

, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अत्यन्त आवश्यक है। गुरुकुल से निकले लोगों में जब कोई प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री बनेगा तब संस्कृत का बोलबाला होगा। उन्होंने कहा कि हमारा देश नकलचियों का देश बनता जा रहा है। अगर भारत को महाशक्ति बनाना है तो शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन करना होगा।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने अपने उद्बोधन में नौजवानों का आह्वान किया कि सपने साकार करने के लिए कुर्बानी देनी पड़ती है। स्वामी दयानन्द जी का सपना तभी साकार हो सकता है जब आर्य समाज का युवावर्ग कुर्बानी के लिए तैयार होगा। उन्होंने कहा कि आने वाला समय वेदों का होगा और साम्प्रदायिकता दूर होगी तथा द्वेष भाव समाप्त होगा और मानसिक विकृतियाँ जड़मूल से खत्म हो जायेंगी। उन्होंने देश की शैक्षिक और आर्थिक विषमता पर सवाल खड़ा करते हुए कहा कि दुनिया की 99 प्रतिशत सम्पत्ति पर केवल एक प्रतिशत लोगों का कब्जा है। और शिक्षा पैसे वालों द्वारा खरीदी जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में शिक्षा के स्तर को उच्च स्तर तक पहुँचाने का समय आ गया है। देश के उत्थान के लिए गुरुकुलों का विकास अत्यन्त आवश्यक है तथा एक पाठ्यक्रम, एक समान शिक्षा तथा निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान लाकर हम शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला सकते हैं।

इस अवसर पर बिहार के राज्यपाल महामहिम सत्यपाल मलिक जी ने अपने ओजस्वी तथा प्रेरणादाई वक्तव्य में कहा कि मानवीय मूल्यों में गिरावट रोकने के लिए लोगों की मानसिकता बदलनी होगी और इसके लिए संस्कारवान शिक्षा जरूरी है। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा पद्धति के एकीकरण का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि गाँव स्तर तक आर्य समाज का प्रचार हो। विद्वान् और उपदेशक गाँव में जाकर प्रचार कार्य करें, जैसा पूर्व में होता था। उन्होंने कहा कि आज जन–जागरण पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। किसी देश को यदि गिराना है या मिटाना है तो वहाँ पर बम या सेना का हमला नहीं अपितु वहाँ की शिक्षा नीति को मिटा दो तो वह स्वयं नष्ट हो जायेगा। हमारी शिक्षा नीति के साथ ऐसा ही किया गया। उन्होंने कहा कि शिक्षा के बजट में कटौती नहीं होनी चाहिए अपितु इसे पर्याप्त रूप से बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि यहाँ ऐसे महामानव हुए हैं जिन्होंने जामा मस्जिद से वेद मंत्र का उच्चारण किया है। उन्होंने कहा कि आज समय बदल रहा है, अतः हमें गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में कुछ परिवर्तन करते हुए अपनी परम्परा के साथ संस्कृति तथा विज्ञान का ताल–मेल भी बैठाना पड़ेगा और आधुनिक तकनीक को स्थान देना होगा।

इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि पूरी दुनिया में शिक्षा पर चर्चा चल रही है। हमारी प्राचीन संस्कृति में गुरुकुलीय शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है और उस शिक्षा के द्वारा हम विश्व गुरु के गौरव को प्राप्त कर पाये। आज समाज की विषम परिस्थितियों को देखते हुए समाज को आर्य समाज की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। उन्होंने कहा कि जिस लक्ष्य और संकल्पना के साथ आपने यह विशाल आयोजन किया है यह प्रयास व्यर्थ नहीं जायेगा। शिक्षा ही किसी समाज की रीढ़ होती है। उन्होंने कहा कि संस्कृत में ही इस देश का जीवन समाहित है। उन्होंने कहा कि भविष्य में यदि कम्प्यूटर जिन्दा रहेगा तो केवल संस्कृत भाषा पर ही जिन्दा रहेगा। आज विदेशों में लोग संस्कृत की तरफ भाग रहे हैं। बड़े–बड़े विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जा रही है। वे संस्कृत की महत्ता को समझ चुके हैं। लेकिन हमारे देश में संस्कृत को भुला दिया गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने गुरुकुलों को पूर्ण समृद्ध बनायें और वहाँ पर संस्कृत के द्वारा अन्य भाषाओं को साथ लेकर विज्ञान का सहारा लेकर विद्वान् तैयार करें जो समाज को उन्नत करने में अपना विशेष योगदान प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि आज विश्व वेद और उपनिषदों को अपना रहा है। क्योंकि वेदों में सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना परिलक्षित है। पूरी दुनिया को परिवार मानकर चलने का समय आ गया है। क्योंकि परिवार में ही प्रेम और सहृदयता होती है। उन्होंने इस गुरुकुल महासम्मेलन की पूर्ण सफलता पर बधाई दी।

इस अवसर पर धन्यवाद देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आर्य समाज जी–जान से अपने विशेष कार्यों में लगा हुआ है। सामाजिक बुराईयों को दूर करने, शिक्षा को समृद्ध करने, युवाओं को चरित्रवान बनाने की दिशा में आर्य समाज ने बहुत कार्य किया है। कुछ वर्ष पूर्व सती प्रथा के खिलाफ ऐतिहासिक देवराला यात्रा, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध स्वामी दयानन्द जी की जन्मस्थली टंकारा से लेकर जलियावाला बाग अमृतसर तक की यात्रा तथा जन–जागरण का कार्य सफलता पूर्वक किया गया था जिसके परिणामस्वरूप आज पूरे देश में कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध वातावरण बना है। शराब तथा नशे के विरुद्ध देश के विभिन्न क्षेत्रों में 10–10, 15–15 दिन की जन–जागरण यात्राएँ निकालकर लोगों को जागरूक करने का कार्य युद्ध स्तर पर किया गया। बेटी बचाओ अभियान के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम सारे देश में चलाये जा रहे हैं। युवाओं को संस्कारित करने के लिए बड़े–बड़े शिविर देश के प्रत्येक भाग में अत्यन्त उत्साह के साथ लगाये जाते हैं। साथ ही अन्धविश्वास और धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध जन–जागरण का कार्य पूरी गति के साथ किया जा रहा है। समाज में व्याप्त ज्वलन्त मुद्दों पर आर्य समाज हमेशा सजग रहता है और आवश्यकतानुसार आन्दोलन भी करता है। शिक्षा पद्धति में आमूल–चूल परिवर्तन करने के लिए पूरे देश में ये आन्दोलन चलाया जायेगा और गुरुकुलों को समृद्ध बनाने का कार्य युद्ध स्तर पर किया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज एकीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है और आने वाले समय में आर्य समाज आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा ऐसा मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ।

इस अवसर पर पूरे सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने सभी आमंत्रित गणमान्य महानुभावों, संन्यासियों, विद्वानों, गुरुकुलों के आचार्यों और ब्रह्मचारी–ब्रह्मचारिणियों का हृदय से धन्यवाद करते हुए कहा कि आपने इतनी बड़ी संख्या में पधारकर इस ऐतिहासिक सम्मेलन को सफल बनाया इसके लिए मैं आप सबका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। हमारा प्रयास रहेगा कि गुरुकुलों का एकीकरण करके इसका एक अलग संविधान बनाया जाये और सभी गुरुकुलों को समृद्ध करके विशेष स्थान दिलाया जाये।

इस अवसर पर गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी ने सभी महानुभावों का हृदय से धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल की इस पवित्र भूमि पर स्वामी आर्यवेश जी ने इतना विशाल सम्मेलन करके गुरुकुल के आचार्यों तथा ब्रह्मचारी–ब्रह्मचारिणियों को आह्लादित कर दिया है। मैं आप सबका आभार एवं धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

समापन समारोह में पधारे सम्माननीय संन्यासियों, प्रतिष्ठित विद्वानों तथा गणमान्य महानुभावों का समय–समय पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, पं. माया प्रकाश त्यागी जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने शॉल उढ़ाकर, अंगवस्त्र प्रदान कर तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान तथा अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सभी गणमान्य महानुभावों का सम्मेलन में पधारने पर धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि इतने विशाल सम्मेलन में कुछ कमियाँ रह जाना स्वाभाविक है। आपको किसी भी प्रकार की यदि कोई असुविधा हुई है तो मैं उसके लिए आपसे क्षमा प्रार्थी हूँ। उन्होंने उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरिद्वार के पदाधिकारियों श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, श्री हाकम सिंह जी, श्री दयाकृष्ण काण्डपाल जी, इं. प्रेमप्रकाश जी शर्मा, श्री वीरेन्द्र पंवार, श्री वेद प्रकाश गुप्ता, श्री दिनेश आर्य, श्री मनपाल सिंह राठी, श्री ओम प्रकाश मलिक तथा उनके सहयोगियों का धन्यवाद किया। जिनके प्रयासों तथा अथक परिश्रम से यह महासम्मेलन अभूतपूर्व सफलता को प्राप्त हुआ। स्वामी जी ने सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य तथा उनकी पूरी टीम, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, राजस्थान से पधारे श्री चांदमल आर्य तथा उनकी पूरी टीम, कर्मठ कार्यकर्ता श्री धर्मेन्द्र पहलवान आदि का भी धन्यवाद किया। जिनके प्रयासों तथा भरपूर सहयोग से इस सम्मेलन को सफल बनाया जा सका। स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा जी की विशेष प्रशस्ति करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया। जिनके प्रयासों से सम्मेलन की इतनी सुन्दर व्यवस्था पूर्ण की जा सकी। उनके गुरुकुल के आचार्य तथा ब्रह्मचारियों ने रात–दिन कठिन परिश्रम करते हुए सारी व्यवस्थाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया, मैं उनका भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। स्वामी जी ने उत्साह के वातावरण में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के समापन की घोषणा की।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के पदाधिकारियों से क्षमा–याचना

गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह का मुख्य दायित्व मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली तथा स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक को सौंपा गया था। मानव सेवा प्रतिष्ठान के मुख्य स्तम्भ श्री रामपाल शास्त्री जी ने अपने विशिष्ट सहयोगियों श्री चन्द्रदेव शास्त्री, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री बलजीत सिंह आर्य, श्री हरवीर शास्त्री आदि के साथ सम्मान समारोह की बृहद योजना तैयार की थी और लगभग 40 प्रतिष्ठित महानुभावों को सम्मानित करने का निश्चय किया था। मानव सेवा प्रतिष्ठान सम्मान समारोह के ऐसे आयोजन प्रतिवर्ष करता है और अब तक सैकड़ों विद्वानों, संन्यासियों, आचार्य–आचार्याओं तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान कर चुका है। सम्मान में प्रतिष्ठान की ओर से सम्मानित होने वाले व्यक्तियों को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र तथा कुछ राशि भी भेंट स्वरूप प्रदान की जाती है। इसी प्रकार प्रतिष्ठान प्रतिवर्ष लाखों रुपये की छात्रवृत्ति भी गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं को प्रदान करता है और नार्थ अमेरिका जाट चेरीटी संस्था के सहयोग से लाखों रुपये का सहयोग उन छात्र–छात्राओं को दिया जाता है जो आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से सम्बन्ध रखते हैं और उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता की अपेक्षा रखते हैं।

मानव सेवा प्रतिष्ठान एक मात्र ऐसी संस्था है जो सेवा के रचनात्मक कार्य में पिछले लगभग 20 वर्ष से कार्यरत हैं। अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में किन्हीं अपरिहार्य कारणों से जो व्यवधान पड़ा उसका मुझे हार्दिक कष्ट है। इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में अनायास अव्यवस्था होने से मानव सेवा प्रतिष्ठान के समस्त पदाधिकारियों तथा सम्मान के लिए सहयोग देने वाले परिवारों के सदस्यों एवं सम्मान के लिए आमंत्रित महानुभावों से मैं इस अव्यवस्था के लिए क्षमा याचना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि वे उदारता का परिचय देते हुए अपना आत्मीय भाव बनाये रखेंगे। महामहिम राज्यपाल महोदय के आगमन पर आवश्यक प्रोटोकाल का निर्वहन करना आवश्यक होता है, उसकी पूर्ति करने के लिए जो व्यवधान पड़ा उसके लिए मुझे अत्यन्त खेद है। आप स्वयं अत्यन्त अनुभवी व्यक्ति हैं, उस परिस्थिति को भली–भांति समझ सकते हैं।

– स्वामी आर्यवेश
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

नोट : शेष चित्र अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक सहमति होना अनिवार्य नहीं है।